सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 88, नई दिल्ली । रविवार, 09 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

मूर्ख व्यक्ति दूर-दूर तक खुशी तलाश था ,ज्ञानी बिना कुछ कर ही उसे पा लेता है।

03 नरेंद्र मोदी के शपथ ग्रहण से पहले दिल्ली के चारों तरफ हुई किलेबंदी
06 निजी बदलावों से ही बदलेगा समाज
08 बांदा सीसी रोड का निर्माण ना हो पाने से परेशान ग्रामीण

दिल्ली के परिवहन मंत्री, परिवहन आयुक्त एवं सचिव एसटीए भारत सरकार के बजट में दिए निर्णय से अनभिज्ञ है या जानबूझ कर अनभिज्ञता दिखा रहे हैं, बड़ा सवाल ?

संजय बाटला

नई दिल्ली। भारत देश की वित्त मंत्री द्वारा बजट में यह घोषणा कर दी गई थी की अब देश भर में वाहन की आरसी, वाहन चालकों के लाइसेंस और वाहन कंडक्टर को 1 अप्रैल से बनवाते समय लगने वाली 200 की फीस नही ली जाएगी और यह सभी दस्तावेज़ वाहन मालिकों/ चालको और कंडक्टर को ई प्रक्रिया से प्राप्त होंगे तथा 1 अप्रैल से कार्ड जारी नही किए जाएंगे ओर इसकी जानकारी हमारे समाचार पत्र में कई बार जनहित को जानकारी हेतु छापी गई थी और इसके अलावा हमने जनहित में यह समाचार भी छापा था की इस आदेश के खिलाफ जयपुर में एक जनहित याचिका भी दायर हुई है और मॉर्थ ने अदालत में बताया था की यह नोटिफिकेशन उनके द्वारा जारी नही किया गया है क्योंकि यह बजट में ही जारी दिशा निर्देश है। **दिल्ली परिवहन विभाग की तो आदत ही है जनता से गैर कानूनी तरीके से आनलाइन आवेदन में ऐसी बंद की जा चुकी फीस लेते रहना और लेकर राजस्व में इज़ाफा करवाना** जिस के तहत आज तक वाहन मालिकों/ चालकों से कार्ड के नाम से फीस लेते जा रहे हैं पर क्या परिवहन विभाग की अपनी शाखाओं में कार्ड जारी किए जा रहे हैं या नहीं की जानकारी **विशेष परिवहन आयुक्त ऑपरेशन एवम्-सचिव एसटीए को नही है, क्या यह सम्भव है।** मंत्री एवम्-आयुक्त द्वारा जारी डीलरो को आदेश की जल्द से जल्द वाहन मालिकों को आरसी कार्ड जारी करे सिर्फ जनता को गुमराह करने सा है। परिवहन विभाग जनता से फीस के नाम पर बंद की जा चुकी फीस को इस सोच से लेता रहता है कि जितना जब तक पैसा लूटा जा सके लूट लिया जाए और राजस्व में इज़ाफा करवाया जाता रहे। बजट में वित्त मंत्री की घोषणा के बाद भी कार्ड के नाम से फीस बटोर रहे हैं तो सिर्फ वाहन डीलरो से नही अपने कार्यालय में भी रोके हुए कार्ड तत्काल प्रिन्ट करवाकर जारी करवाए।

अयोध्या धाम उत्तर प्रदेश में बन रहा एयरपोर्ट से भी सुन्दर रेलवे स्टेशन

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। आप सभी ने दुनिया भर में एक से बढक़र एक सुन्दर एयरपोर्ट देखे होंगे पर अब आप जल्दी ही एयरपोर्ट से भी सुंदर रेलवे स्टेशन देखेंगे। अयोध्या धाम में ऐसा रेलवे स्टेशन बनने जा रहा है जो सुन्दर से भी सुन्दर एयरपोर्ट को मात दे देगा। यह खास रेलवे स्टेशन 12 एकड़ से भी अधिक जमीन पर बन रहा है और तीन मंजिल का होगा। इस रेलवे स्टेशन पर वह सारी सुख-सुविधाएं उपलब्ध होगी जो आज दुनियां के किसी एयरपोर्ट पर भी उपल्ब्ध हैं। उत्तर प्रदेश की आध्यात्मिक नगरी में खास रेलवे स्टेशन यह रेलवे स्टेशन उत्तर प्रदेश की आध्यात्मिक नगरी अयोध्या शहर के पास अयोध्या धाम के नाम से बनने वाला यह रेलवे स्टेशन किसी भी एयरपोर्ट से सुंदर बनेगा। इस रेलवे स्टेशन को भारत सरकार की कंपनी राइटस बना रही है। अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन पर आपको क्लॉक रूम, चाइल्ड केयर रूम, फूड प्लाजा, वेटिंग हॉल के अलावा साफ सुथरा शौचालय, पर्यटक सूचना केंद्र और पूजा की आवश्यकता की दुकानों उपलब्ध होगी। अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन पर टैक्सी बे और एक विस्तारित कोर्स भी बनाया जा रहा है। यह रेलवे स्टेशन वर्ष-2025 में बनकर तैयार हो जाएगा, कंपनी ने जनवरी 2025 तक काम पूरा करने का लक्ष्य रखा है। यहां पर एक साथ लगभग 15 हजार यात्रियों के ठहरने की व्यवस्था भी रखी जा रही है। अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन की एक विशेषता यह है कि यह राम मंदिर की वास्तुकला से बनाया जा रहा है। अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन भी उसी पत्थर से बनाया जा रहा है जिससे भव्य राम मंदिर बनाया गया है। अयोध्या धाम स्टेशन का निर्माण तीन मंजिला है। रेलवे पटरियों के सामने के कोनों पर छत्री शैली की "शिखर" संरचनाएं बनाई गई हैं।

अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन पर खास इंतजाम जनहित में अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन पर फूड प्लाजा, वेटिंग हॉल, क्लॉक रूम, चाइल्ड केयर रूम, पूजा की आवश्यक सामग्री की दुकानों के अतिरिक्त लिफ्ट, एस्केलेटर, शौचालय और पर्यटक जानकारी केंद्र है। स्टेशन पर एक विस्तारित पोर्च और एक टैक्सी बे भी है। 12 एकड़ के इस रेलवे स्टेशन में 15000 यात्रियों की जगह है। पुरुषों और महिलाओं के लिए अलग-अलग डॉरमेट्री बनाई गई हैं सभी कमरों में एक अटैच टॉयलेट है। कुछ महीनों की प्रतीक्षा के बाद देख सकेंगे एयरपोर्ट से भी सुंदर रेलवे स्टेशन।

ग्रामीण सेवा वेलफेयर एसोसिएशन ने विशेष परिवहन आयुक्त से मुलाकात की

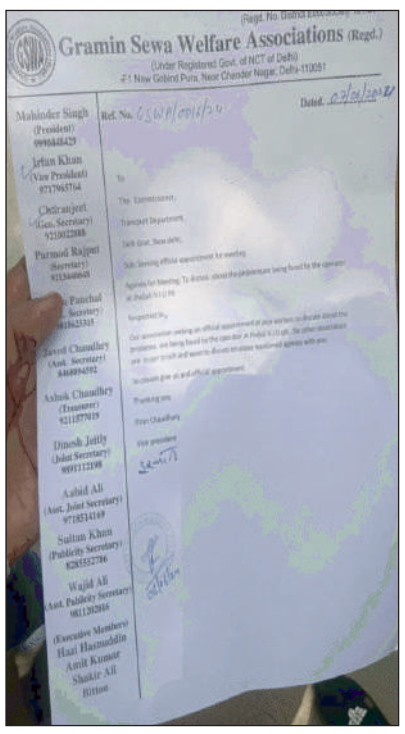

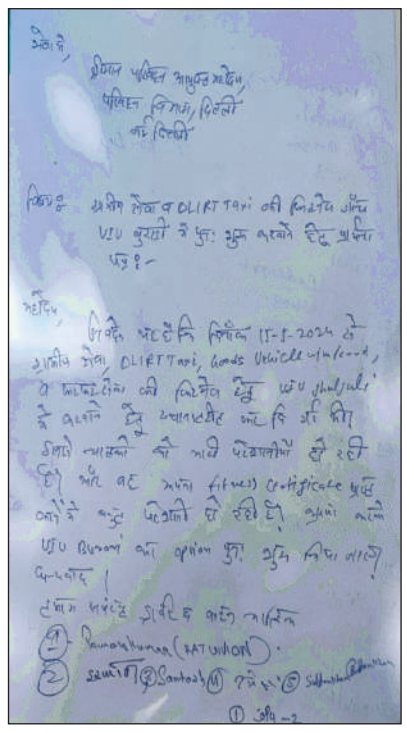

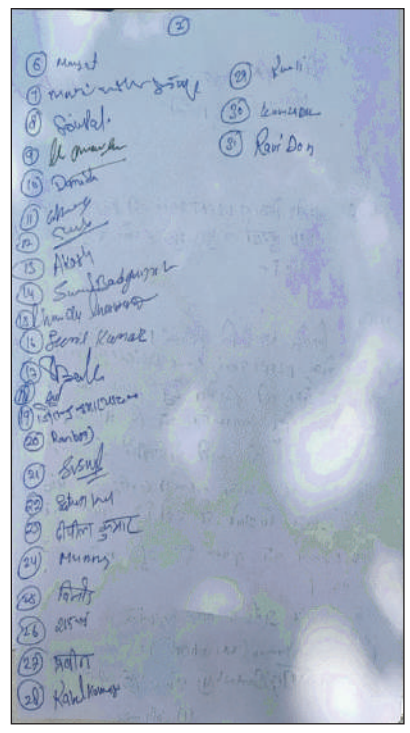

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली में चल रही ग्रामीण सेवा और डीएल 1आरटी के अंदाजा 20 वाहन मालिक इकट्ठे होकर आज आईपी डिपो डीटीसी हेडक्वार्टर (जहा आजकल दिल्ली परिवहन विभाग के आयुक्त, विशेष आयुक्त, और उपायुक्त बैठ रहे हैं) अपनी परेशानियों के हल के लिए मिलने गए। कार्यालय में उनकी भेट/ मुलाकात विशेष परिवहन आयुक्त शहजाद आलम से हुई और लम्बे समय तक चर्चा हुई पर जिस समस्या का वाहन मालिको को समाधान चाहिए था उस पर कोई जवाब नही दिया। आपकों बता दें आचार संहिता के चलते वीआईयू बुराड़ी फिटनेस शाखा में जिन वाहनों की फिटनेस हो रही थी उन्हे पूर्व सूचना और पब्लिक नोटिस जारी किए बिना प्राइवेट कम्पनी को फायदा पहुंचाने के उद्देश्य से झुलझुली फिटनेस शाखा में परिवर्तित कर दिया और उसी के विरोध और तत्काल प्रभाव से वापिस वीआईयू बुराड़ी फिटनेस शाखा में करने की बात लेकर गए थे पर विशेष परिवहन आयुक्त की बातो से पता चला की उन्होने ही यह आदेश सोची समझी रणनीति के अनुसार किया है तो वह मंत्री परिवहन दिल्ली के भी कहने पर क्यों वापिस करने के दिशा निर्देश जारी करे। इसी मुद्दे को पुनः उठाने की लिए ग्रामीण सेवा वेलफेयर एसोसिएशन और अन्य सहयोगी एसोसिएशन के पद्दाधिकारियो के द्वारा आयुक्त परिवहन से मिलने के लिए समय मांगा है और उनके समक्ष अपनी पूरी परेशानियां बता कर अब हल मांगेगे।

क्या दिल्ली सरकार का यह आदेश सच में अतिक्रमण से मुक्ति दिला पाएगा या सिर्फ राजस्व बटोरने का हिस्सा बन कर रह जाएगा, बड़ा सवाल?

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार ने शहर के क्षेत्रफल या लंबाई के हिसाब से अतिक्रमण पर जुर्माना लगाने की घोषणा की है, एमसीडी या डीडीए को दूसरों/ जनता को जुर्माना तभी देना होगा जब उन्हें पता चलेगा कि उन्होंने कितना अतिक्रमण किया हुआ है। हालाँकि स्वयं राजनीतिक दलों और नेताओं द्वारा गरीबों को बुलाकर अतिक्रमण करवाना और कानून को तोड़ना एक फैशन बन गया है जिसके कारण हर दिन लोग मानसिक आघात झेलते हैं और पीड़ित होते हैं। सड़क पर अतिक्रमण से आवागमन में भारी परेशानी होती है। लोग सड़क पर चल रहे हैं, सड़क की ओर चल रहे हैं या सड़क के बीच में चल रहे हैं जिससे दुर्घटना का खतरा है। केवल सरकारी विभाग एमसीडी, डीडीए स्थानीय पुलिस इस पर अंकुश नहीं लगा सकती बल्कि हम सभी को इसका ध्यान रखना होगा। सड़कों और सर्किलों पर जानवरों को आना-जाना, खड़ा या बैठा रहना, जानवर का वाहनों के सामने कूद पड़ना और दुर्घटनाग्रस्त हो जाना आज कोए कोई खास बात नहीं रह गई इस को रोकने के लिए सरकारी विभागों पर इल्जाम लगाने की जगह हम लोगो को भी अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी क्योंकि आवारा पशुओं को सिर्फ यातायात पुलिस नहीं रोकेगी। आप जिम्मेदारी लेंगे तभी इस समस्या का समाधान होगा। इस प्रकार के अतिक्रमण से ना सिर्फ जानवरों को चोट पहुंच रही हैं अपितु हमें ओर हमारे पारिवारिक सदस्यों का जीवन संकट में पड़ रहा है साथ ही मानसिक चोट लग रही है। इसलिए मेरी आप सभी से निवेदन है कि सभी विभागों को मिलाकर इस पर कम किया जाए। ट्रैफिक पुलिस वाहन का चालान काट कर अपना कर्तव्य निभाने का दिखावा कर रही है। सड़क सुरक्षा, जाम मुक्त और दुर्घटना मुक्त सड़के तभी जनता को मिल सकती है जब जनता स्वयं और सभी सम्बंधित विभाग आपना काम पूरी ईमानदारी से करे।

ओमनी रोड सेफ्टी फाउंडेशन जगमोहन सिंह

दिल्ली एनसीआर ट्रांसपोर्ट एकता मंच के प्रतिनिधि अध्यक्ष श्री हरीश ग्रोवर जी, उपाध्यक्ष श्री दिनकर सिंह जी,यु.पी.बॉर्डर प्रभारी श्री अजय जी,महासचिव श्याम सुन्दर यु.पी.बॉर्डर पर कार्यरत हमारे ट्रांसपोर्ट्स भाइयों को हो रही परेशानी को लेकर श्रीमान सिद्धार्थ सिंह जी,सहायक आयुक्त, प्रभारी राज्य कर, गाज़ियाबाद यु.पी.को अवगत कराया गया जिसको उन्होंने गम्भीरता पूर्वक सुना और हर संभव समस्याओं को हल करने का आश्वासन दिया।

सड़क सुरक्षा और पैदल चलने की आदत: आने वाले भविष्य की आवश्यकता

आज के दौर में सड़क सुरक्षा के साथ-साथ पैदल चलने की आदत डालना अत्यंत आवश्यक हो गया है। आधुनिक परिवहन साधनों की बढ़ती संख्या और लोगों की आरामपसंद जीवनशैली ने सड़क सुरक्षा के मुद्दों को और जटिल बना दिया है। सड़क पर बढ़ती वाहनों की भीड़ के कारण पैदल चलने वालों की सुरक्षा पर बड़ा सवाल खड़ा हो गया है।

सड़क पर बढ़ती भीड़ और पैदल चलने की मजबूरी

आजकल की स्थिति यह हो गई है कि लोगों ने पैदल चलना लगभग छोड़ दिया है। हर कोई या तो रिक्शा, ऑटो या कार का उपयोग करने लगा है। खासकर बड़े शहरों में, जहां हर किसी के पास अपनी गाड़ी है, सड़क पर पैदल चलना मानो असंभव हो गया है। इस भीड़भाड़ की स्थिति में पैदल चलना मजबूरी बन गया है, जो न केवल सुरक्षा के दृष्टिकोण से खतरनाक है, बल्कि स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक है।

वृंदावन यात्रा का अनुभव

हाल ही में मैंने वृंदावन की यात्रा की। वहां मैंने देखा कि किस प्रकार लोगों को सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक तो किया गया है, लेकिन फिर भी उन्हें मजबूरी में पैदल चलने के लिए विवश किया गया है। संकीर्ण गलियों और भीड़भाड़ के कारण लोग चाह कर भी वाहन का उपयोग नहीं कर सकते। यह स्थिति न केवल उनके लिए असुविधाजनक है, बल्कि उनके पॉकिट पर भी भारी पड़ती है। वाहन का खर्चा, पार्किंग की समस्या और सड़क जाम जैसी समस्याओं से जूझना पड़ता है।

पैदल चलने के लाभ

वर्तमान समय में हमें पैदल चलने की आदत को पुनः अपनाने की आवश्यकता है। इसके अनेक फायदे हैं:

स्वास्थ्य लाभ: पैदल चलना एक उत्तम व्यायाम है, जो न केवल शारीरिक स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी महत्वपूर्ण है। यह हृदय को मजबूत करता है, मांसपेशियों को सुदृढ़ करता है और तनाव को कम करता है।

पर्यावरण संरक्षण: पैदल चलने से वाहनों का उपयोग कम होगा, जिससे प्रदूषण में कमी आएगी और पर्यावरण संरक्षण में मदद मिलेगी।

आर्थिक बचत: पैदल चलने से वाहन ईंधन और पार्किंग खर्च में बचत होती है। इससे पॉकिट पर बोझ भी कम पड़ता है।

सामाजिक लाभ: पैदल चलने से आप अधिक लोगों से मिल सकते हैं, सामाजिक संबंध मजबूत होते हैं और सामुदायिक भावना बढ़ती है।

अतः यह आवश्यक है कि हम सड़क सुरक्षा के साथ-साथ पैदल चलने की आदत डालें। यह हमारे स्वास्थ्य, पर्यावरण और आर्थिक स्थिति के लिए लाभकारी होगा। सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक रहना और पैदल चलने की आदत डालना, आने वाले भविष्य की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। हमें इसे अपने जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाना चाहिए, ताकि हम न केवल सुरक्षित रह सकें, बल्कि स्वस्थ और खुशहाल जीवन भी जी सकें।

indiangreenbuddy@gmail.com

इनसाइड

सिजेरियन डिलीवरी के बाद वजन बढ़ने की ना करें चिंता, लाइफस्टाइल में शामिल कर लें 3 व्यायाम, तेजी से घटेगा वजन

सिजेरियन डिलीवरी के बाद अक् सर डॉक् टर मां को ब्रेस् ट फीड कराने की सलाह देते हैं, जिससे बच् चे की तो सेहत अच् छी रहती ही है, मां का वजन भी कंट्रोल में रहता है . लेकिन, कुछ ऐसे सिंपल एक सरसाइज हैं, जिसकी मदद से मांएं आसानी से अपने वजन को कम कर सकती हैं .

सिजेरियन डिलीवरी एक ऐसी सर्जरी है, जिसमें बच्चे को जल्दी और सुरक्षित रूप से जन्म देने के लिए ऑपरेशन किया जाता है. सिजेरियन डिलीवरी के बाद रिकवरी का समय नॉर्मल डिलीवरी की तुलना में थोड़ा लंबा होता है. इस वजह से उनका वजन तेजी से बढ़ने लगता है. बढ़ते वजन को रोकने के लिए आप अपने डॉक्टर की सलाह के बाद कुछ सिंपल व्यायामों की मदद ले सकती हैं.

क यों बढ़ता है वजन

हेल्थलाइन के मुताबिक, दरअसल सिजेरियन डिलीवरी के बाद ट्रांसवर्स एब्डोमिनिस की मांसपेशियां, मसलन रीढ़, पेल्विक फ्लोर की मांसपेशियों, पेट और पीठ के निचले हिस्से की मांसपेशियों कमजोर हो जाती हैं. सिजेरियन डिलीवरी के बाद, इन क्षेत्रों को सक्रिय और मजबूत करना जरूरी होता है, जिससे रिकवरी फास्ट हो. ऐसे में अगर आप सी-सेक्शन के बाद डॉक्टर की सलाह लेकर कुछ खास एक्सरसाइज करें तो आप अपने बढ़ते फैट को कम कर सकती हैं और फिट दिख सकती हैं.

सिजेरियन डिलीवरी के बाद करें ये 3 व्यायाम

बेली ब्रीदिंग एक सरसाइज

कोर मसल्स की मजबूती के लिए आप बेली ब्रीदिंग एक्सरसाइज जरूर करें. इसके लिए आप बेड पर लेट जाएं. अपने हाथों बेली पर रखें और बॉडी को रिलैक्स छोड़ दें. अब इस तरह गहरी सांस लें कि आपके बेली पर रखा हाथ उठने लगे. अब 3 सेंकेंड तक होल्ड करें. फिर मुंह से सांस छोड़ें, जिससे पेट का बेली बटन अंदर की तरफ जाए. ऐसा 10 बार करें.

वॉल सिट एक सरसाइज

यह एक फुल बॉडी आइसोमेट्रिक एक्सरसाइज है जिसमें लोअर बैक से लेकर, कोर, पेल्विक फ्लोर आदि भी मजबत बनता है. इसे करने के लिए दीवार से 1 से 2 फीट की दूरी पर खड़े हो जाएं. अब धीरे से दीवार पर सटें और बैठने के पोजीशन में आ जाएं. अब गहरी सांस लें और निकालें. अपने पेट को अंदर की तरफ खींचन की कोशिश करें. प्रयास करें कि 1 मिनट तक इसी पोजीशन में होल्ड करें.

लेग स्लाइड

सर्जरी के 6 से 8 सप्ताह के बाद आप इस व्यायाम को कर सकती हैं. बॉडी कोर मसल्स और पेट के मसल्स को मजबूत बनाने के लिए अब आप मैट पर लेट जाएं. अब पैर के नीचे कोई टॉवल रखें. अब घुटनों को मोड़ते हुए अपने फुट को जमीन पर रखें. अब गहरी सांस लें. अब पैर को धीरे धीरे सीधा करें और जमीन से बिना सटाए वापिस पहले पोजीशन में आ जाएं.इसी तरह दोनों पैरों से ये व्यायाम करें. 10 बार इसे करें.

धीरे-धीरे अभ्यास करते-करते आप पाएंगी कि आपके मसल्स मजबूत हो रहे हैं और फैट गायब हो रही है. हालांकि, अपने डॉक्टर की सलाह के बाद ही इन व्यायामों को अपने लाइफस्टाइल में शामिल करना बेहतर रहेगा.

शास्त्रीय हिंदुस्तानी संगीत की दुनिया में सबसे प्रसिद्ध नामों में से एक थीं हीराबाई बड़ोदेकर

भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश में जहां संगीत और नृत्य कई लोगों के जीवन का हिस्सा हैं, ऐसे कई लोग हैं जो संगीत से जीवनयापन करते हैं। लेकिन उनमें से हर कोई अपने आसपास के दर्शकों का दिल नहीं जीत पाता। हीराबाई बड़ोदेकर, भारतीय हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में सबसे प्रसिद्ध नामों में से एक, ने न केवल अपनी आवाज़ और गायन के लिए आलोचनात्मक प्रशंसा हासिल की थी; लेकिन आम आदमी का दिल जीतने में भी कामयाब रहे। बड़ौदा में एक किराना घराने के परिवार में संगीतकारों के परिवार में जन्मी, बचपन से ही संगीत हमेशा उनके जीवन का हिस्सा था, हालांकि हीराबाई बड़ोदेकर को अपने पिता को उनके लिए गाते हुए सुनने का कभी आनंद नहीं मिला, क्योंकि वह अपनी मां और परिवार से दूर रहती थीं। परिवार। बहुत ही कम उम्र से, हीराबाई बड़ोदेकर ने अपने भाई और चाचा की चौकस निगाहों में अभ्यास किया, जो उनके वफादार शिक्षक थे।

बचपन के वर्ष

हीराबाई बड़ोदेकर का नाम चंपाकली था जब उनका जन्म वर्ष 1905 में हुआ था। वे बंबई में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के किराना घराने की सदस्य थीं। हीराबाई बरोडकर की जड़ें बड़ौदा रियासत में थीं, जहां शास्त्रीय संगीत और नृत्य रूप हर दिन के जीवन का हिस्सा थे। उनके माता-पिता, उस्ताद अब्दुल करीम खान और ताराबाई माने, उनके रिश्ते को विस्तारित परिवार द्वारा स्वीकार नहीं किए जाने के बाद बड़ौदा शहर से बंबई में बसने के लिए भाग गए थे। हालांकि, उनके अपनी जड़ों से दूर भागने का मतलब संगीत करियर की राह का अंत नहीं था, जिसका हिस्सा हीराबाई बारोडेकर अंततः बनेंगी।

इतिहास में अभिलेखों के अनुसार, ताराबाई माने बड़ौदा की राजमाता के भाइयों में से एक सरदार मारुति राव माने की बेटी थीं। 19वीं शताब्दी की शुरुआत में अपने बचपन के वर्षों के दौरान, ताराबाई माने ने उस्ताद अब्दुल करीम खान से संगीत सीखा, जो बड़ौदा में एक मात्र दरबारी संगीतकार थे। दोनों धीरे-धीरे प्यार में पड़ गए, एक ऐसा एहसास जो समाज में उनकी स्थिति और रैंक के बीच की खाई के कारण परिवार के किसी भी सदस्य द्वारा समर्थित नहीं था। दंपति के पास बंबई शहर में बसने के लिए बड़ौदा से भाग जाने के अलावा और कोई विकल्प नहीं था। ताराबाई माने और अब्दुल करीम खान ने बॉम्बे में शादी की और पांच बच्चों, दो बेटों और तीन बेटियों को जन्म दिया। तीसरी संतान का नाम चंपाकली रखा गया, जिसे बाद में वयस्क होने पर हीराबाई बड़ोदेकर नाम दिया गया।

हालाँकि, चंपाकली के माता-पिता बहुत लंबे समय तक साथ नहीं रहने वाले थे। जब वह 17 वर्ष की थी तब वे अलग हो गए, और इसलिए चंपाकली ने अपने पिता से संगीत की बहुत कम शिक्षा प्राप्त की, जो पहले उसकी माँ को दी गई थी। अंतर को भरने के लिए, हीराबाई बड़ोदेकर के सबसे बड़े भाई सुरेशबाबू माने उनके संगीत शिक्षक बने, जिन्होंने उन्हें किराना घराने की तकनीकी में तैयार किया। अपने प्रारंभिक प्रशिक्षण के बाद, हीराबाई बड़ोदेकर अपने चाचा, उस्ताद अब्दुल वाहिद खान के मार्गदर्शन में आईं, जो उनके पिता के चचेरे भाई थे।

कैरियर एक गायक के रूप में

अपने भाई और चाचा के अधीन प्रशिक्षण हीराबाई बड़ोदेकर के लिए बहुत फायदेमंद साबित हुआ, जो जल्द ही बड़े दर्शकों के सामने प्रदर्शन करने में सक्षम हो गईं। उनकी आवाज़ की हमेशा प्रशंसा की गई थी और वह उनकी पीढ़ी और आने वाली कई पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत थीं। शास्त्रीय हिंदुस्तानी संगीत की दुनिया में हीराबाई बड़ोदेकर का पहला कदम वर्ष 1920 में था जब उन्होंने सार्वजनिक संगीत कार्यक्रमों में प्रदर्शन करना शुरू किया। यह 20वीं सदी की शुरुआत थी और हालांकि इस समय तक महिलाएं अपने घरों से बाहर निकल चुकी थीं, फिर भी विश्व मंच पर एक भारतीय महिला के प्रदर्शन का विचार अभी भी कम ही सुना जाता था। इसलिए, हीराबाई बड़ोदेकर न केवल एक प्रसिद्ध शास्त्रीय गायिका थीं, बल्कि वे विश्व मंच पर महिलाओं द्वारा शास्त्रीय गायन के क्षेत्र में भी अग्रणी थीं। हीराबाई बारोडेकर भारत में टिकट के साथ संगीत कार्यक्रम आयोजित करने वाली पहली महिला थीं।

आज तक, शास्त्रीय संगीत विशेषज्ञ हीराबाई बड़ोदेकर की आवाज़ को मधुर और भावपूर्ण कहते हैं। 'तार सा' राग की उनकी प्रस्तुति उनके संगीत कार्यक्रमों का मानदंड बन गई, जिसमें हीराबाई बड़ोडेकर ने प्रत्येक संगीत समारोह में विशेष संगीत के लिए प्रदर्शन करने को कहा। किराना घराना 20वीं शताब्दी के दौरान पहले से ही शास्त्रीय संगीत का एक बहुत लोकप्रिय घर था और हीराबाई बड़ोदेकर की सफलता ने इसे जनता के बीच और अधिक प्रसिद्ध बनाने में मदद की। वह ख्याल, ठुमरी, भजन और मराठी नाट्य संगीत की विशेषज्ञ थीं। एक शास्त्रीय संगीत गायिका के रूप में हीराबाई बड़ोदेकर का करियर मंच प्रदर्शन के भीतर ही सीमित नहीं रहा। मंच गायन में कुछ वर्षों के बाद ही उन्होंने एक रिकॉर्डिंग कलाकार के रूप में काम करना शुरू किया, जो आम लोगों के बीच

उनकी बढ़ती लोकप्रियता के कारण काफी हद तक जिम्मेदार थी।

एक फिल्म कलाकार और संगीत विद्यालय के रूप में करियर

हीराबाई बड़ोदेकर अपने शुरुआती स्कूल के वर्षों के दौरान कई नाटकों का हिस्सा रही थीं। मंच भी उसके लिए कोई नई जगह नहीं थी। इसलिए, हीराबाई बड़ोदेकर एक शास्त्रीय संगीत गायिका और रिकॉर्डिंग कलाकार से एक फिल्म अभिनेत्री के रूप में आगे बढ़ीं। एक फिल्म कलाकार के रूप में उनका करियर हालांकि हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की तुलना में उतना शानदार नहीं था। फिर भी 'जनाबाई', 'नगर पालिका', 'सुवर्ण मंदिर' और 'प्रतिभा' जैसी फिल्मों में उनका योगदान अभी भी इतिहास में अंकित है। शास्त्रीय गायन में एक समृद्ध कैरियर और फिल्मों में एक यादगार करियर के अलावा, हीराबाई बड़ोडेकर ने एक संगीत विद्यालय भी स्थापित किया जहां युवा लड़कियां हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत सीखती हैं। उनका स्कूल नूतन संगीत विद्यालय, नाटकों के माध्यम से शास्त्रीय संगीत की अवधारणा को लोकप्रिय बनाने में सफल रहा।

हीराबाई बड़ोदेकर शास्त्रीय भारतीय संगीत के क्षेत्र में इतना प्रसिद्ध नाम बन गईं कि उन पर भारत सरकार द्वारा दिए गए कई पुरस्कारों और पुरस्कारों की बौछार की गई। सर्वोच्च सम्मान जो उनके रास्ते में आया, वह शायद 15 अगस्त 1947 को लाल किले में आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम गाने का प्रस्ताव था, जिस दिन भारत को अंग्रेजों से आजादी मिली थी। उनकी आवाज ने उन्हें जगद गुरु शंकराचार्य द्वारा दी गई 'गणसरस्वती' की उपाधि दी। बुलबुल सरोजिनी नायडू ने उन्हें 'गण कोकिला' कहा था। वर्ष 1953 में, हीराबाई बड़ोदेकर एक प्रतिनिधिमंडल के प्रमुख सदस्यों में से एक थीं, जिसे भारत से चीन और पूर्वी अफ्रीका के कई देशों में भेजा गया था। प्रतिनिधिमंडल ने भारत की सांस्कृतिक विरासत को प्रस्तुत करने के लिए विश्व दर्शकों के सामने प्रस्तुति दी।

मृत्यु और विरासत

हीराबाई बड़ोडेकर 20 नवंबर, 1989 को अपनी मृत्यु के बाद हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में योगदान देने वाले छात्रों के एक समूह को तैयार करने में सफल रहीं। उसकी विरासत पर। 1992 से हीराबाई बड़ोदेकर की प्रतिभा को हर साल मुंबई में सुरेशबाबू - हीराबाई स्मृति संगीत समारोह संगीत समारोह के माध्यम से मनाया जाता है।

समयरेखा

1905: हीराबाई बड़ोदेकर का जन्म चंपाकली के रूप में हुआ था।
1920: शास्त्रीय गायन को पेशे के रूप में अपनाया।
1922: उसके माता-पिता अलग हो गए।
1947: 15 अगस्त को भारत के स्वतंत्रता समारोह के हिस्से के रूप में राष्ट्रीय गीत गाने के लिए चुना गया।
1953:एक भारतीय प्रतिनिधिमंडल के हिस्से के रूप में प्रदर्शन करने के लिए चीन और पूर्वी अफ्रीका का दौरा किया।
1955: संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार प्राप्त किया।
1970: पद्म भूषण से सम्मानित।
1989: 20 नवंबर को निधन।
1992: शास्त्रीय संगीत में उनके योगदान का सम्मान करने के लिए उनके छात्र द्वारा एक संगीत समारोह शुरू किया गया।

व्यस्त जिंदगी में अकेली तो नहीं पड़ गईं आप ? 30 की उम्र के बाद 5 तरीकों से बनाएं पक्की सहेलियां, जिंदगी होगी गुलजार

घर-परिवार और करियर को संवारने के चक्कर में अक्सर महिलाएं दोस्तों से दूर हो जाती हैं. यहां हम बता रहे हैं कि महिलाएं उम्र बढ़ने के बाद भी किस तरह नए दोस्त बना सकती हैं और पक्की यारी निभा सकती हैं.

अगर आप भी अपनी पुरानी दोस्तों को मिस करती हैं और उनके साथ आपका कनेक्शन काफी दूर हो गया है तो निश्चित रूप से आप खालीपन महसूस करती होंगी. ऐसे में अगर आपकी उम्र बढ़ती जा रही है और आप इस दुविधा में हैं कि सच्चे दोस्त कॉलेज या स्कूल टाइम में ही बनते हैं तो यह पूरी तरह सच नहीं है. दोस्त बनाने की कोई उम्र नहीं होती और आप हर उम्र में पक्की दोस्ती के लिए हाथ बढ़ा सकते हैं.

अगर आप अपनी सोच या शौक वाले लोगों से मिलती हैं या आपको ऐसे लोग मिलते हैं जिनका साथ आपको अच्छा लगता है तो बेहतर होगा कि आप उनके साथ मिलना जुलना शुरू करें. महिलाएं कई बार खुद के रुटीन की दुहाई देते हुए घर पर बैठी रह जाती हैं और किसी से भी मिल जुल नहीं पातीं. ऐसा ना करें और लोगों से मिलें. यकीन मानिए, इन्हीं में से क्या पता आपकी कोई पक्की वाली सहेली या दोस्त मिल जाए.

आप पहले कभी किसी एक्टिविटीज में शामिल रही हों तो फिर से उन चीजों के लिए वक्त निकालें. इसके लिए आप आसपास के क्लब को ज्वाइन कर सकती हैं. आप पेंटिंग, आर्ट, हैकिंग्स, ट्रैवलर्स आदि ग्रुप को ज्वाइन करें और लोगों से मिलना जुलना शुरू करें. क्या पता, आप वहीं अपने खास दोस्त से मिल जाएं. यकीन मानिए, अधिकतर दोस्ती ऐसी ही होती है और ये दोस्ती जीवनभर साथ निभाने वाली होती है. आपका जिन चीजों में इंट्रेस्ट है उस क्षेत्र में आप वॉलेंटियरिंग में हिस्सा ले सकती हैं. इसके लिए आप पास की लाइब्रेरी या क्लब के नोटिस बोर्ड या व्हाट्सएप ग्रुप पर नजर रखें और लोगों की मदद लें. यहां आकर आप अपने मन का काम भी कर पाएंगी और एक जैसे शौक वाले लोगों से मिलेंगी भी. हो सकता है कि यहीं आपको अच्छी दोस्त मिल जाए. अपने ऑफिस कुलीग्स के साथ भी आप पर्सनल दोस्ती का हाथ बढ़ा सकती हैं. आप ऑफिस में गर्ल ग्रुप बनाएं और कहीं बाहर साथ में लंच या डिनर के लिए प्लान बनाएं. यही नहीं, अगर आपका एक जैसा इंटरेस्ट है,

महिलाएं निराशा दूर करने के लिए रोज खाएं 5 फूड्स, मूड रहेगा अच्छा, सेहत में भी आएगा सुधार

अक्सर महिलाएं परिवार आदि के देखभाल में खुद का केयर करना छोड़ देती हैं. इसकी वजह से वे फिजिकल ही नहीं, मेंटल प्रॉब्लम से भी जूझने लगती हैं. हम बताते हैं कि आप अपने डाइट में किन चीजों को शामिल कर निराशा या डिप्रेशन से खुद को उबार सकती हैं.

हमारे खान पान की आदतों को असर सेहत पर सबसे ज्यादा पड़ता है. यह हमारी मानसिक सेहत को भी काफी प्रभावित करते हैं. ऐसे में अक्सर महिलाएं परिवार और बच्चों की देख रेख में इतना अधिक व्यस्त रहती हैं कि वे खुद का ख्याल रखने में लापरवाही कर जाती हैं और इस वजह से वे शारीरिक ही नहीं, मानसिक रूप से भी परेशानियों में घिर जाती हैं. ऐसे हालात में डिप्रेशन, स्ट्रेस, निराशा, थकान आदि की समस्या उन्हें मेंटली कमजोर बनाने लगती हैं और यह कई बार उनके लाइफ के लिए भी खतरनाक बन जाता है. यहां हम बता रहे हैं कि महिलाएं किन चीजों को अपने डाइट में शामिल कर खुद को निराशा से बचा सकती हैं और सेहतमंद व खुशहाल जी सकती हैं.

मूड बेहतर बनाने के लिए डाइट में शामिल करें ये चीजें

विटामिन डी का सेवन

हेल्थलाइन के मुताबिक, अगर आपके शरीर में विटामिन डी कमी हो रही है तो ये शारीरिक ही नहीं, मानसिक सेहत को भी डायरेक्ट प्रभावित करता है. यही नहीं, इसकी कमी से डिप्रेशन जैसी समस्या भी हो सकती है. इसके लिए खासतौर पर महिलाओं को अपने डाइट में मशरूम, फिश, मिल्क को जरूर शामिल करना चाहिए.

प्याज लंबे समय तक बढ़िया रखेंगे 5 तरीके

प्याज लंबे समय तक बढ़िया रखेंगे 5 तरीकेआगे देखें...

सिलेनियम रिच फूड

अच्छी सेहत के लिए सिलेनियम रिच फूड काफी जरूरी होता है. शोधों के मुताबिक, अगर शरीर में सिलेनियम की कमी हो जाए तो वे डिप्रेशन तक की शिकार हो सकती हैं. इसके लिए आप डाइट में नट्स, अनाज, बीन्स, सीफूड्स, लीन मीट को शामिल करें.

ओमेगा 3 फैटी एसिड

ब्रेन को इंप्रूव करने के लिए ओमेगा 3 फैटी एसिड काफी जरूरी होता है. यह डिप्रेशन को दूर करता है और हैप्पी हार्मोन्स को भी एक्टिव करने में मदद करता है. इसके लिए आप डाइट में फिश, ड्राई फूड्स, कनोला ऑयल, फ्लेक्स सीड, डार्क ग्रीन लीफी वेजिटेबल का सेवन करें.

गुड कार्ब

मूड को बूस्ट करने के लिए गुड कार्ब का सेवन भी आपके लिए फायदेमंद होता है. यह सेरोटोनिन को बढ़ाता है जिससे मूड लिफ्ट करने में मदद मिलती है. जब भी आप लो महसूस करें या निराशा अनुभव करें तो आप होल ग्रेन फूड का सेवन कर मूड को बेहतर बना सकते हैं. इसके अलावा आप फल, सब्जी, फाइबर रिच फूड का सेवन करें.

किन चीजों से रहें दूर

हेल्थलाइन के मुताबिक, अगर आप अपने खराब मूड से परेशान हैं तो बेहतर होगा कि आप अपने डाइट से कैफीनयुक्त चीजों को दूर रखें. इसके अलावा अल्कोहल आदि से भी दूरी बनाएं. ये चीजें आपकी समस्या को और बढ़ देती हैं.

नरेंद्र मोदी के शपथ ग्रहण से पहले दिल्ली के चारों तरफ हुई किलेबंदी , जानें किन-किन चीजों पर लगी पाबंदी

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली में मोदी सरकार के शपथ ग्रहण की तैयारियां तेज हो गई हैं। कल यानी रविवार को नरेंद्र मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेंगे. इसको लेकर राष्ट्रीय राजधानी में सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। दिल्ली को नो फ्लाइंग जोन घोषित कर दिया गया है। ड्रोन उड़ाने, पैराग्लाइडिंग पर रोक लगा दी गई है। 9 और 10 जून को दिल्ली में धारा 144 लागू की जाएगी। राष्ट्रपति भवन की सुरक्षा कड़ी कर दी गई है। राष्ट्रपति भवन की सुरक्षा के लिए अर्धसैनिक बलों की 5 कंपनियां तैनात होंगी. एनएसजी कमांडो, ड्रोन और स्नाइपर की तैनाती होगी. शपथ ग्रहण समारोह में बांग्लादेश, श्रीलंका, मालदीव, भूटान, नेपाल, मॉरीशस और सेशेल्स के शीर्ष नेताओं के शामिल होने की उम्मीद है. शहर के लीला, ताज, आईटीसी मौर्या, क्लेरिजेस और ओबेरॉय जैसे होटलों को पहले ही सुरक्षा घेरे में ले लिया गया है।

'हाई अलर्ट' पर राष्ट्रीय राजधानी, 3 लेयर की सुरक्षा

अधिकारियों ने बताया कि शपथ ग्रहण समारोह के लिए दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन के सदस्य देशों की गणमान्य हस्तियों को आमंत्रित किए जाने के मद्देनजर राष्ट्रीय राजधानी 'हाई अलर्ट' पर रहेगी. समारोह के दिन दिल्ली पुलिस के स्वाट और एनएसजी के कमांडो राष्ट्रपति भवन एवं विभिन्न अहम स्थानों के आसपास तैनात रहेंगे. शपथ ग्रहण के लिए दिल्ली में थ्री टियर सिक्योरिटी (तीन लेयर की) रहेगी।

समारोह में इन देशों के नेता

हो सकते हैं शामिल भारत ने नरेंद्र मोदी के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होने के लिए बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना, मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू, भूटान के प्रधानमंत्री शेरिंग तोबगे, मॉरीशस के प्रधानमंत्री प्रविंद जगन्नाथ और सेशेल्स के राष्ट्रपति वेवेल रामखेलावन को आमंत्रित किया है. नेपाल के पीएम पुष्प कमल दहल प्रचंड भी शपथ ग्रहण में शामिल होंगे. दहल रविवार से भारत की तीन दिवसीय यात्रा पर रहेंगे।

नरेंद्र मोदी चुने गए एनडीए संसदीय दल के नेता

बीजेपी के नेतृत्व वाले एनडीए ने लगातार तीसरे लोकसभा चुनाव में जीत दर्ज की है. 4 जून को नतीजे घोषित होने के बाद शुक्रवार (7 जून) को एनडीए संसदीय दल की बैठक हुई, जिसमें नरेंद्र मोदी को संसदीय दल का नेता चुना गया. रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने पीएम पद के लिए मोदी के नाम का प्रस्ताव रखा था. इस प्रस्ताव पर एनडीए घटक दल के सभी नेताओं ने अपनी सहमति जताई।

एनडीए ने 292 सीटों पर दर्ज की जीत जिसमे बीजेपी की 240, इसके बाद मोदी ने राष्ट्रपति के समक्ष सरकार बनाने का दावा पेश किया. इसके बाद राष्ट्रपति ने नरेंद्र मोदी को 9 जून को सरकार बनाने का न्योता दिया. रविवार की शाम सवा सात बजे मोदी सरकार का शपथ ग्रहण समारोह है. लोकसभा चुनाव के नतीजों में एनडीए को 292 सीटें जबकि आईएनडीआईए गठबंधन को 234 सीटें मिली. इनमे से **अकेले बीजेपी को 240 और कांग्रेस के खाते में 99 सीटें गई हैं।**

इंडिया गठबंधन से अब दिल्ली हुई दूर....

परिवहन विशेष। एसडी सेठी।

नई दिल्ली। शुक्रवार को भाजपा नीत एनडीए गठबंधन ने संसदीय दल की बैठक में सर्वसम्मति से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम पर मोहर लगा दी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 9 जून शाम 6:00 बजे तीसरी बार शपथ ग्रहण करेगें। इससे पहले पुरानी संसद के सेंट्रल हॉल में एनडीए संसदीय दल के नवनिर्वाचित सांसदों के बीच उपस्थित नरेंद्र मोदी को संसदीय दल के नेता के रूप में सर्व सम्मति से चुना गया। संसदीय दल के नेता के रूप में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम का प्रस्ताव भाजपा के राजनाथ सिंह द्वारा पेश किया गया। प्रस्ताव का अनुमोदन गृह मंत्री अमित शाह ने किया। उसके बाद एनडीए के घटक दल टीडीपी के नेता चन्द्रबाबू नायडू द्वारा भी अनुमोदन कर सर्वसम्मति से पास किया गया। जेडीयू के नेता नीतीश कुमार ने नरेंद्र मोदी के नाम का समर्थन किया और नरेंद्र मोदी के गले लगकर पैर छुए। शिव सेना के एकनाथ शिंदे, एलएनजेपी के पासवान, समेत तमाम घटक दल के नेताओ ने भी नरेंद्र मोदी के नाम पर मोहर लगा दी। एनडीए घटक दलों का समर्थन मिलने के बाद नरेंद्र मोदी का प्रधानमंत्री का रास्ता साफ हो गया है।

दूसरी ओर इंडिया गठबंधन ने अब तक अपने पीएम का नाम तक तय ही नहीं कर पाए है। इस बीच गठबंधन से आम आदमी पार्टी ने कांग्रेस से नाता तोड़कर लिया है।आप ने ऐलान कर दिया है कि उसका कांग्रेस से रिश्ता महज लोकसभा चुनाव तक था।

फरवरी 2025 में दिल्ली विधानसभा के होने वाले चुनाव में आम आदमी पार्टी एकला चलो पर अमल करेगी। वहीं सूत्रों के मुताबिक शिव सेना उदव ठाकरे के नेता भी एनडीए में आने को तैयार है। जल्द ही वह भी इंडी गठबंधन को ओके बॉय बॉय टाटा करने जा रहे है। इसको देखते हुए जाहिर है कि इंडी गठबंधन का जोड खुल गया है। वह बिखरने के कगार पर है।इससे तो लगता है कि इंडिया गठबंधन से अब धीरे-धीरे दिल्ली दूर होती जा रही है।

जल संरक्षण वास्तव में एक गंभीर मुद्दा

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। जल संरक्षण वास्तव में एक गंभीर मुद्दा है, खासकर पानी की कमी से जूझ रहे क्षेत्रों में। फ़रीदाबाद में कार धोने वाले गैराजों द्वारा पानी के दुरुपयोग को रोकने के लिए एफएमडीए सीईओ के प्रयास सराहनीय हैं। हालाँकि, जैसा कि आपने बताया, व्यक्तियों द्वारा पानी के दुरुपयोग को संबोधित करना, जैसे कि गृहिणियाँ घर के रैंप को साफ करना, भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

जल संरक्षण प्रयासों को बढ़ाने के लिए, एफएमडीए सीईओ निम्नलिखित कदमों पर विचार कर सकते हैं:

1. कड़े विनियमन को लागू करना: ऐसे कानून बनाएं जो घर के रैंप धोने सहित गैर-आवश्यक गतिविधियों के लिए पानी के उपयोग को सख्ती से नियंत्रित करें। अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए इन विनियमों में उल्लंघन के लिए दंड शामिल होना चाहिए।

2. जन जागरूकता अभियान: निवासियों को जल संरक्षण के महत्व और पानी की बर्बादी के प्रभाव के बारे में शिक्षित करने के लिए व्यापक अभियान शुरू करें। इसमें कार्यशालाएँ, सामुदायिक बैठकें और सूचनात्मक सामग्री शामिल हो सकती हैं।

3. वैकल्पिक प्रथाओं को प्रोत्साहित करना: जल-सघन सफाई के विकल्पों के उपयोग को बढ़ावा देना, जैसे कि झाड़ू लगाना या जल-कुशल सफाई विधियों और प्रौद्योगिकियों का उपयोग करना।

4. जल उपयोग ऑडिट: आवासीय

क्षेत्रों में पानी के उपयोग की निगरानी करने और उच्च खपत वाली गतिविधियों की पहचान करने के लिए ऑडिट आयोजित करें। परिवारों को उनके जल पदचिह्न को कम करने पर प्रतिक्रिया और सिफारिशें प्रदान करें।

5. सामुदायिक भागीदारी: पड़ोस के समूह बनाकर संरक्षण प्रयासों में स्थानीय समुदायों को शामिल करें जो जिम्मेदार जल उपयोग की निगरानी और प्रचार करते हैं।

6. संरक्षण के लिए प्रोत्साहन: उन परिवारों के लिए प्रोत्साहन की पेशकश करें जो जल-बचत उपायों को अपनाते हैं, जैसे कि पानी के बिल या मान्यता कार्यक्रमों पर छूट।

नियामक उपायों को शिक्षा और सामुदायिक भागीदारी के साथ जोड़कर, एफएमडीए व्यक्तिगत और संस्थागत दोनों स्तरों पर पानी की बर्बादी को प्रभावी ढंग से संबोधित कर सकता है, जिससे भविष्य के लिए स्थायी जल उपयोग सुनिश्चित हो सके।

महिलाओ की शादी की उम्र 21 वाला विधेयक खत्म

परिवहन विशेष न्यूज

एसडी सेठी। 17 वीं लोकसभा का कार्यकाल खत्म होने के साथ ही पुरूषों और महिलाओ के लिए शादी की उम्र में समानता लाने वाला विधेयक समाप्त हो गया है।बाल विवाह निषेध(संशोधन) विधेयक 2021 को लोकसभा में पेश किया गया था। इसके बाद इस विधेयक को शिक्षा ,महिला,बच्चे,युवा,और खेल संबंधी स्थाई समिति के पास भेजा गया था।इसे लेकर स्थायी समिति को समय-समय पर कई विस्तार प्राप्त हुए।

अब कानून और संविधान का हवाला देते हुए पूर्व लोकसभा महासचिव और संविधान विशेषज्ञ पीडीपी आचार्य के मुताबिक 17वीं लोकसभा का कार्यकाल खत्म होने के साथ ही यह विधेयक समाप्त हो गया हो गया। बता दें कि इस विधेयक का मुख्य उद्देश्य महिलाओ की शादी की न्यूनतम आयू को 18 से बढाकर 21 वर्ष करने के साथ बाल विवाह निषेध अधिनियम 2006 में संशोधन करना है। उल्लेखनीय है कि 2006 अधिनियम के तहत न्यूनतम आयू 20 साल से कम में शादी करने वाला व्यक्ति वयस्क होने के दो साल बाद यानि 23 साल की उम्र में विवाह रद्द करने के लिए आवेदन कर सकता है।बता दें कि आम चुनाव में 18 वीं लोकसभा के सदस्यों के निर्वाचित होने के बाद ही 17 वीं लोकसभा को भंग कर दिया गया। लोकसभा चुनाव 2024 के परिणाम में भाजपा नीत गठबंधन एनडीए ने बहुमत के साथ एक बार फिर सरकार बना रही है। लोगों का कहना है कि अपना सही भविष्य जीवन साथी चुनने की उम्र 21 साल और देश के भविष्य का नेता चुनने की उम्र 18 साल सही मजाक बन गया था।

सफदरजंग अस्पताल ने योग को चिकित्सा पद्धति में शामिल करने के लिए किया सेमिनार का आयोजन

स्वतंत्र सिंह भुल्लर

नईदिल्ली। आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के केंद्रीय योग और प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद (CCRYN) के तहत सफदरजंग अस्पताल में योग और प्राकृतिक चिकित्सा ओपीडी और जीवनशैली हस्तक्षेप केंद्र ने ₹रोगियों और स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के स्वास्थ्य को बढ़ाने के लिए चिकित्सा पद्धति में योग को शामिल करना₹ शीर्षक से एक सेमिनार का सफलतापूर्वक आयोजन किया।

इस सेमिनार में योग, स्वास्थ्य सेवा और अनुसंधान के क्षेत्रों के प्रतिष्ठित विशेषज्ञों ने चिकित्सा पद्धति में योग को शामिल करने के बहुमुखी लाभों का पता लगाने के लिए एक साथ आए। डॉ. सुजाता जॉर्ज योग और प्राकृतिक चिकित्सा वरिष्ठ सलाहकार चिकित्सक ने बताया कि इस कार्यक्रम में सफदरजंग अस्पताल के लगभग 85 चिकित्सा पेशेवरों ने भाग लिया, जिनमें डॉ. जयंती मणि अतिरिक्त चिकित्सा अधीक्षक, डॉ.

आर. पी. अरोड़ा एएमएस, डॉ. गौरव अरोड़ा एएमएस, एलोपैथी डॉक्टर, रेजिडेंट, नर्सिंग स्टाफ, स्वास्थ्य सेवा प्रशासक और आयुष विभाग के डॉक्टर शामिल थे।

सेमिनार के मुख्य आकर्षण में शामिल हैं: योग के शारीरिक और मनोवैज्ञानिक लाभों पर साक्ष्य-आधारित अंतर्दृष्टि, सीसीआरवाईएन के निदेशक डॉ. राघवेंद्र राव जैसे प्रतिष्ठित वक्ताओं द्वारा प्रस्तुत की गई। चिकित्सा सेटिंग्स में योग के उपयोग को और अधिक मान्य और विस्तारित करने के लिए शोधकर्ताओं और चिकित्सकों के बीच सहयोगी अनुसंधान के अवसरों पर चर्चा। ₹स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों के लिए स्वस्थ जीवन शैली अभ्यास और योग₹ पर एक व्यावहारिक सत्र, जिसमें स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के बीच बर्नआउट को कम करने और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार के लिए योग के महत्व पर प्रकाश डाला गया, डॉ. अथिराय के.आर. द्वारा लिया गया। "वाई-ब्रेक" पहल का परिचय, कर्मचारियों के बीच मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए आयुष मंत्रालय द्वारा कार्यस्थल के लिए डिज़ाइन किया गया एक छोटा, निर्देशित योग सत्र। CCRYN के निदेशक डॉ. राघवेंद्र राव ने कहा, "चिकित्सा पद्धति में योग का एकीकरण स्वास्थ्य के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है जो रोगियों और स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं दोनों को लाभान्वित करता है।" "यह सेमिनार योग के वैज्ञानिक आधार और आधुनिक चिकित्सा में इसके व्यावहारिक अनुप्रयोगों को उजागर करने में महत्वपूर्ण रहा है।" सफदरजंग अस्पताल में योग और प्राकृतिक चिकित्सा ओपीडी और जीवनशैली हस्तक्षेप केंद्र शिक्षा, अनुसंधान और सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है, जो व्यक्तियों और समुदायों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए समग्र प्रथाओं को मुख्यधारा की स्वास्थ्य देखभाल में एकीकृत करने का प्रयास करता है।

देखे वर्ष 1857 में दिल्ली के मानचित्र का साईज !

जिस तरह भारत देश में अन्य सारे शहर अभी फैले है और खेतों के प्लॉट कटने लगे ठीक वैसे ही दिल्ली भी कभी बहुत छोटा शहर हुआ करता था।

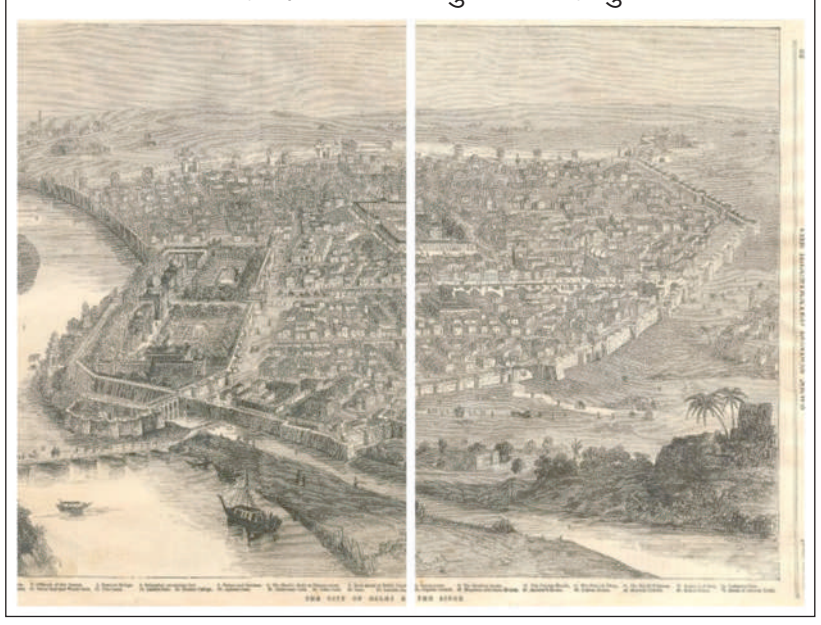

क्या आप "कानून 30" और कानून "30 ए" के बारे में जानकारी रखते है ?

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। 30-A संविधान में निहित एक कानून है। इस कानून को संविधान में शामिल करने की कोशिश की गई तब सरदार वल्लभ भाई पटेल ने इसका कड़ा विरोध किया था और कहा, ₹यह कानून हिन्दुओं के साथ विश्वासघात है, इसलिए अगर यह कानून संविधान में लाया गया, तो मैं इसके खिलाफ कैबिनेट और कांग्रेस पार्टी से इस्तीफा दे दूंगा। आखिरकार सरदार पटेल की इच्छा के आगे घुटने टेकने पड़े थे। लेकिन दुर्भाग्य से पता नहीं इस घटना के बाद कुछ ही महीनों में सरदार वल्लभ भाई पटेल की अचानक मौत हो गई ? सरदार पटेल की मृत्यु के बाद इस कानून को संविधान में शामिल किया गया।

30-ए क्या है इस कानून के अनुसार - हिंदुओं को अपना ₹हिन्दू धर्म₹ सिखाने/पढ़ाने की अनुमति नहीं है। ₹अधिनियम 30-ए₹ उसे अनुमति या अधिकार नहीं देता है। हिन्दुओं को अपने निजी कॉलेजों/ शैक्षणिक संस्थानों में हिंदू धर्म पढ़ाना मना है। हिंदू धर्म सिखाने/पढ़ाने के लिए भारत देश में इस कानून के कारण स्कूल/कॉलेज/शैक्षणिक संस्थान शुरू नहीं हो सकते। एक्ट 30-ए के तहत पब्लिक स्कूलों या कॉलेजों में हिन्दू धर्म पढ़ाने की किसी को अनुमति नहीं है।

"कानून 30"। इस "कानून 30" के अनुसार मुसलमान, सिख और ईसाई अपनी धार्मिक शिक्षा के लिए इस्लामी, सिख, ईसाई धार्मिक स्कूल शुरू कर सकते हैं।

मुसलमान, सिख और ईसाई अपना धर्म सिखा सकते हैं।

कानून 30 मुसलमानों को अपना 'मदरसा' शुरू करने का पूरा अधिकार और अनुमति देता है और संविधान का अनुच्छेद 30 ईसाइयों को अपने धार्मिक स्कूल और कॉलेज स्थापित करने और पढ़ाने और सिखाने का पूरा अधिकार और अनुमति देता है। फ्री में अपने धर्म का प्रचार करो, इसका दूसरा कानूनी पहलू यह है कि हिन्दू मंदिरों का सारा पैसा और संपत्ति सरकार के विवेक पर छोड़ी जा सकती है, हिन्दू मंदिरों में हिंदू भक्तों द्वारा किए गए सभी धन और अन्य दान को राज्य के खजाने में ले जाया जा सकता है।

वहीं मुस्लिम और ईसाई मस्जिदों से दान और भिक्षा केवल ईसाई-मुस्लिम समुदाय के लिए दी जाती है। अधिनियम 30-ए₹ और अधिनियम 30₹ को लागू करने से हिंदुओं के साथ भेदभाव हुआ। यही कारण है आज हिन्दू लोक कथाओं तक सीमित है। हिन्दुओं को अपने शास्त्रों का ज्ञान नहीं है। यह अनुच्छेद 30-ए के कारण है कि हम अपने देश में कहीं भी भगवद गीता नहीं पढ़ा सकते हैं।

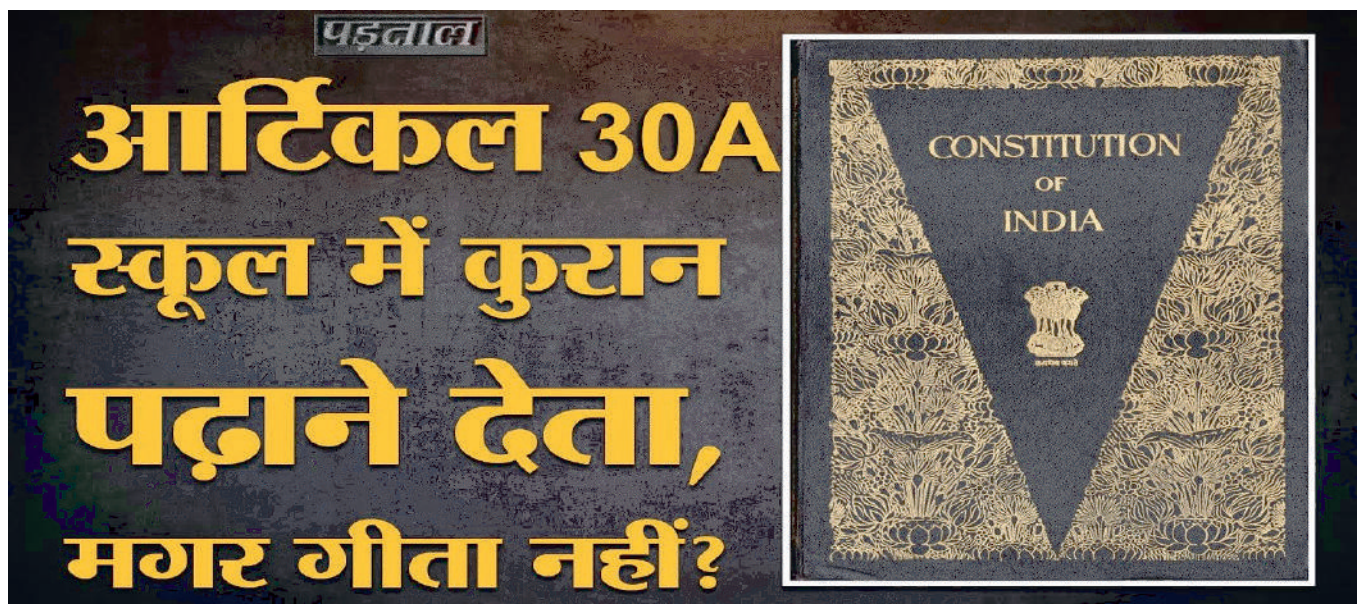

नोएडा एयरपोर्ट के नजदीक बनेगा हैबिटेट सेंटर और इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, जल्द मांगे जाएंगे आवेदन

नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के पास हैबिटेट सेंटर व इंडिया इंटरनेशनल सेंटर बनाए जाएंगे। पार्किंग के लिए पचास प्रतिशत जमीन होगी। अक्टूबर में नोएडा एयरपोर्ट से यात्री सेवाएं संचालित करने का लक्ष्य रखा गया है। सेक्टर नोएडा में डेढ़ -डेढ़ सौ एकड़ में विकसित किया जाएगा। सलाहकार एजेंसी के चयन के लिए जल्द प्रक्रिया शुरू हो जाएगी।

ग्रेटर नोएडा। नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के नजदीक हैबिटेट सेंटर व इंडिया इंटरनेशनल सेंटर बनाए जाएंगे। यमुना प्राधिकरण के सेक्टर नौ में तीन सौ एकड़ में इन्हें विकसित किया जाएगा।

पार्किंग के लिए होगी पचास प्रतिशत जमीन

पचास प्रतिशत जमीन पार्किंग के लिए होगी। प्राधिकरण हैबिटेट सेंटर व इंडिया इंटरनेशनल सेंटर के विकास के लिए सलाहकार एजेंसी नियुक्त करेगा। इसके लिए जल्द आवेदन मांगे जाएंगे।

अक्टूबर में यात्री सेवाएं संचालित करने का लक्ष्य

यीडा क्षेत्र में नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट का निर्माण चल रहा है। अक्टूबर में यहां से यात्री सेवाएं संचालित करने का लक्ष्य है। नोएडा एयरपोर्ट के शुरू होने से यीडा क्षेत्र को राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय गतिविधियों का प्रमुख केंद्र बनाने के लिए प्राधिकरण ने हैबिटेट सेंटर एवं इंडिया इंटरनेशनल सेंटर विकसित करने का फैसला किया है।

प्राधिकरण सीईओ डा. अरुणवीर सिंह का कहना है कि गौतमबुद्ध नगर में राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय आयोजनों के लिए अभी तक खास ढांचागत सुविधाएं नहीं है। हैबिटेट सेंटर व इंडिया इंटरनेशनल सेंटर के विकसित होने से राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय स्तर की कॉन्फ्रेंस, प्रदर्शनी, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि के आयोजन सफलता पूर्वक हो सकेंगे।

सेक्टर नोएडा में डेढ़ -डेढ़ सौ एकड़ में किया जाएगा विकसित

सेक्टर नोएडा में डेढ़ -डेढ़ सौ एकड़ में इन्हें विकसित किया जाएगा। भूखंड के पचास प्रतिशत हिस्से पर पार्किंग की सुविधा दी जाएगी। सलाहकार एजेंसी के चयन के लिए जल्द प्रक्रिया शुरू की जाएगी।

पिट रहे युवक को बचाने पहुंचे व्यक्ति के पेट में घोंपा चाकू, चार लोगों पर केस दर्ज

नोएडा के थाना फेज-दो इलाके में लाठी-डंडों से पिट रहे एक युवक को बचाने गए युवक पर चाकू से हमला हो गया। जिसके बाद उसे गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया। इलाज के बाद पीड़ित ने चार अज्ञात पर केस दर्ज कराया। पुलिस ने अब इस मामले में जांच तेज कर दी है। पुलिस ने कहा कि आरोपियों की धरपकड़ की जा रही है।

नोएडा। कोतवाली फेज-दो क्षेत्र में लाठी-डंडों से पिट रहे एक युवक को बचाना एक व्यक्ति को भारी पड़ गया। आरोपितों ने पीड़ित पर चाकू से हमला कर दिया। पुलिस ने पीड़ित की शिकायत पर चार अज्ञात लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

एक व्यक्ति को सरियों और लाठी-डंडों से जमकर पीटा

गांव इलाहाबास के पवन ने दर्ज कराई एफआईआर में बताया कि वह 27 मई की रात करीब 9 बजे वह अपने ई-रिक्शा चार्जिंग स्टेशन से कर्मचारियों के लिए खाना लेने पुराना कोर्ट कांप्लैक्स फेज-दो पहुंचा। वहां कैंटीन पर चार लोग मिलकर एक व्यक्ति को बुरी तरह सरियों व लाठी-डंडों से मार रहे थे।

आरोपितों ने पीड़ित पर चाकू से किए कई वार

उसे छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन आरोपितों ने पीड़ित पर चाकू से कई वार कर दिए। चाकू लगते ही शिकायतकर्ता घायल होकर जमीन पर गिर गया। पुलिस (Noida Police) ने घायलावस्था में चौधरी अस्पताल पहुंचाया। जहां उपचार हुआ।

पुलिस ने शिकायत के बाद मुकदमा किया दर्ज

हालत में सुधार होने पर पीड़ित ने चार अज्ञात लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है। कोतवाली प्रभारी निरीक्षक विंध्याचल तिवारी का कहना है कि पीड़ित की शिकायत पर मुकदमा दर्ज कर लिया है। जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

करंट से किसान की मौत,गुस्साए ग्रामीणों ने किया सड़क जाम...

गाजियाबाद जिले के लोनी के ट्रॉनिका सिटी थाना इलाके में गांव में खेत से घर आ रहे युवक की करंट लगने से मौत हो गई। घटना के बाद गुस्साए ग्रामीणों ने सड़क जाम कर दिया। यह सभी मुआवजे के साथ ही जर्जर तार को बदलने की मांग कर रहे थे। पुलिस ने उन्हें हटाने का प्रयास किया लेकिन वह नहीं माने। बाद में किसी तरह समझा-बुझा कर उन्हें हटाया गया।

गाजियाबाद। ट्रॉनिका सिटी थाना क्षेत्र मंडोला गांव में खेत से घर आ रहे युवक को करंट लगने के कारण देवेन्द्र उर्फ पानू उम्र 50वर्ष पुत्र जमीत की मौत हो गई। घटना के बाद आक्रोशित लोगों ने बागपत लोनी मार्ग को जाम कर दिया।

पुलिस ने जाम खुलवाने का किया प्रयास

आंदोलन कर रहे लोग मुआवजे के साथ ही जर्जर तार को बदलने की मांग कर रहे थे। लोनी एसडीएम निखिल चक्रवर्ती एसीपी अंकुर विहार भास्कर वर्मा एसीपी लोनी सूर्यबली मौर्य दलबल के साथ वहां पहुंचे और जाम हटाने का प्रयास किया। लेकिन वे लोग नहीं माने।

अधिकारियों के आश्वासन के बाद जाम खुला

सड़क जाम कर रहे लोग विद्युत विभाग के अधिकारीयों को बुलाने की मांग पर अड़े रहे। अधिकारियों के आश्वासन के बाद जाम हटाया गया। लेकिन कुछ देर के बाद पुनः भारी संख्या में ग्रामीण मार्ग पर पहुंचे दोनों तरफ से मार्ग जाम कर दिया। ग्रामीणों का कहना था कि अधिकारियो की लापरवाही व जर्जर तार के कारण ही बराबर घटना घटती रहती है।

14 साल से फरार 50 हजार के इनामी बदमाश को यूपी एसटीएफ ने दबोचा, दिल्ली पुलिस भी भेज चुकी जेल

दिल्ली-एनसीआर में चोरी के वाहनों को खंपाने वाले 50 हजार के इनामी बदमाश राजकुमार पांडेय को यूपी एसटीएफ ने आज बिहार से गिरफ्तार कर लिया। आरोपी साथी संग चोरी के वाहन खपाता था। आरोपित के खिलाफ मुरादनगर थाने में 2010 मामला में दर्ज हुआ था। गाजियाबाद पुलिस ने उस पर 50 हजार का इनाम घोषित किया था। दिल्ली पुलिस 2009 में उसे जेल भेज चुकी है।

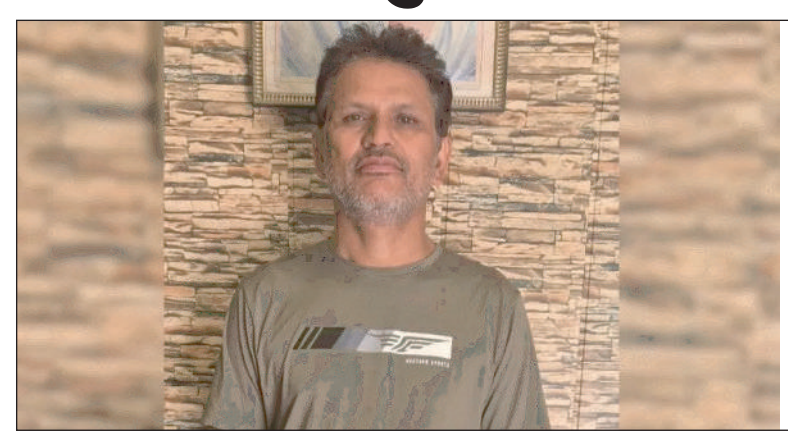

तीनों ने चोरी के वाहन की खरीद-फरोख्त का काम शुरू किया। पूर्वांचल के बाद इन्होंने अपने पैर दिल्ली-एनसीआर (Delhi NCR) में भी पसारने शुरू किये। वाहनों को चोरी कर उन्हें कम दामों में बेचने लगे। इसके बाद चोरी के वाहनों के पार्ट की बिक्री भी शुरू कर दी। आरोपित नगद नारायण व राजकुमार को 2009 में दिल्ली की कालकाजी पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेजा।

मोदीनगर। दिल्ली-एनसीआर में चोरी के वाहनों को खंपाने वाले 50 हजार इनामी बदमाश राजकुमार पांडेय को यूपी एसटीएफ ने गुरुवार को बिहार से गिरफ्तार कर लिया। आरोपित के खिलाफ मुरादनगर थाने में 2010 में मुकदमा दर्ज हुआ था। उस समय आरोपित का साथी नगद नारायण गिरफ्तार किया गया था।

पुलिस को चकमा देकर फरार

उसके कब्जे से चोरी की कार बरामद हुई थी। जबकि राजकुमार पुलिस को चकमा देकर फरार हो गया। तभी से पुलिस इसकी तलाश में थी। गाजियाबाद पुलिस कमिश्नरेट की तरफ से आरोपित पर 50 हजार का इनाम घोषित किया गया।अब मामला यूपी एसटीएफ को सौंपा गया। मुखबिर की सूचना पर बिहार के पटना से आरोपित की गिरफ्तारी हुई।

आरोपित बिहार का रहने वाला

डीसीपी ग्रामीण विवेक चंद यादव ने बताया कि गिरफ्तार आरोपित बिहार के थाना छपरा क्षेत्र स्थित गांव मजरिया का राजकुमार पांडेय(52) हैं। आरोपित ने 2001 से 2005 के बीच दवाइयों की सप्लाई का काम किया। इसी दौरान उसकी पहचान छपरा के नगद नारायण से हुई। उसने राजकुमार की मुलाकात दूर के रिश्तेदार लखनऊ के कर्नल एपमी सिंह से कराई।

तीनों ने चोरी के वाहन की खरीद-फरोख्त का काम किया शुरू

तीनों ने चोरी के वाहन की खरीद-फरोख्त का काम शुरू किया। पूर्वांचल के बाद इन्होंने अपने पैर दिल्ली-एनसीआर (Delhi NCR) में भी पसारने शुरू किये। वाहनों को चोरी कर उन्हें कम दामों में बेचने लगे। इसके बाद चोरी के वाहनों के पार्ट की बिक्री भी शुरू कर दी। आरोपित नगद नारायण व राजकुमार को 2009 में दिल्ली की कालकाजी पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेजा।

वहां से जमानत पर आने पर आरोपितों ने क्षेत्र बदल दिया। मुरादनगर में चोरी के वाहनों की खरीद-फरोख्त करने लगे। पुलिस 9Ghaziabad Police) ने 2010 में मुखबिर की सूचना पर दबिश दी तो आरोपित नगद नारायण चोरी के वाहन के साथ पकड़ा गया। लेकिन राजकुमार फरार हो गया। नगर नारायण से पूछताछ में कई राज सामने आए। पुलिस ने दोनों के नाम केस दर्ज किया। तभी से पुलिस राजकुमार की तलाश में जुटी थी।

समाजवादी पार्टी की साइकिल पर कब तक सवारी करेगी कांग्रेस

कांग्रेस की यह महत्वाकांक्षा भविष्य में समाजवादी पार्टी के लिए मुश्किल का सबब बन सकती है, क्योंकि तब एक दूसरे के वोट बैंक में सेंधमारी की कोशिश होगी, जहां से दोनों दलों के बीच सियासी तलवार खींचना निश्चित है।

अजय कुमार

आम चुनाव में उत्तर प्रदेश से जो नतीजे आये उससे एनडीए गठबंधन का खेल मुश्किल गया, वहीं इंडी गठबंधन को बड़ी सफलता मिली है। इसके चर्चे भी खूब हो रहे हैं। इससे पहले 2017 के यूपी विधानसभा चुनाव में राहुल-अखिलेश का साथ आना और 2019 के लोकसभा चुनाव के समय मायावती-अखिलेश के एकजुट होने की नाकामयाब पटकथा लिखी जा चुकी थी, इसलिए इस बार भी राहुल-अखिलेश की जोड़ी से किसी को ज्यादा उम्मीद नहीं थी, लेकिन इस बार तो राहुल-अखिलेश ने चमत्कार दिखाते हुए बीजेपी से आगे-पीछे का सारा हिसाब एक ही बार में बराबर कर लिया। इसके मुख्य किरदार सपा प्रमुख अखिलेश यादव है,जिन्होंने न केवल समाजवादी पार्टी को शानदार जीत दिलाई बल्कि कांग्रेस को भी यूपी में एक बार फिर से उभरने का मौका दिया, जिसकी वजह से नवगठित मोदी सरकार की स्थिति पहले जैसी मजबूत नहीं लग रही है। परंतु सबसे बड़ा सवाल यही है कि इस गठबंधन का भविष्य कितना लम्बा है। ऐसा इसलिये पूछा जा रहा है क्योंकि चुनाव नतीजे आये कुछ ही दिन नहीं हुए हैं और गांधी परिवार और कांग्रेस यूपी को लेकर नई रणनीति बनाने लगी है। ऐसे में समाजवादी पार्टी की साइकिल पर चढ़कर उत्तर प्रदेश में शानदार प्रदर्शन करने वाली कांग्रेस यदि जल्द सपा की साइकि से उतर कर यूपी की राजनीति में अपना पुराना मुकाम हासिल करने की कोशिश करें तो किसी को आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए।

कांग्रेस की यह महत्वाकांक्षा भविष्य में समाजवादी पार्टी के लिए मुश्किल का सबब बन सकती है, क्योंकि तब एक दूसरे के वोट बैंक में सेंधमारी की कोशिश होगी, जहां से दोनों दलों के बीच सियासी तलवार खींचना निश्चित है। यह सब कब शुरू होगा यह तो निश्चित तौर पर नहीं कहा जा सकता है लेकिन धीरे धीरे दोनों दलों के बीच दूरियां बढ़ाना शुरू होगी जो अंत में विस्फोटक रूप धारण कर सकते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि आज जो समाजवादी पार्टी का वोट बैंक है वह कभी कांग्रेस का मजबूत वोट बैंक हुआ करता था। कांग्रेस इसे फिर से

हासिल करना चाहती है। इस बात के संकेत मिलना भी शुरू हो गए हैं. कहां जा रहा है की यूपी में कांग्रेस को पुरानी प्रतिष्ठा लौटाने के लिए राहुल गांधी, मां सोनिया गांधी के समझाने पर रायबरेली से ही सांसद बने रहने को तैयार हो गए हैं।

लोकसभा चुनाव के नतीजे आने के बाद कांग्रेस की पहली बैठक और परिवार के साथ रायशुमारी के बाद उन्होंने यह फैसला किया। पार्टी सूत्रों के मुताबिक, राहुल दोनों सीटों में से कौन सी सीट चुनें, उनकी इस दुविधा को सोनिया गांधी ने दूर कर दिया है। सोनिया ने राहुल को समझाया कि यूपी कांग्रेस के लिए बेहद जरूरी है। इसलिए उन्हें रायबरेली अपने पास रखना चाहिए। यह भी कहा जा रहा है कि प्रियंका दोबारा यूपी प्रदेश प्रभारी की जिम्मेदारी संभाल सकती हैं। 2022 के यूपी विधानसभा चुनाव में हार के बाद उन्होंने इस पद को छोड़ दिया था। राहुल के सीट छोड़ने पर प्रियंका वायनाड से उपचुनाव लड़ सकती हैं। गांधी परिवार इसके जरिए उत्तर के साथ दक्षिण में पकड़ मजबूत रखना चाहता है।

राहुल के रायबरेली में बने रहने की सहमति के पीछे मां सोनिया की वह भावुक अपील भी है, जिसमें उन्होंने कहा था, 'आपको बेटा सौंप रही हूं।' राहुल ने भी चुनाव नतीजे आने के पहले ही दिन पहली प्रेस कॉन्फ्रेंस में इसका संकेत दिया था। उन्होंने यूपी को स्पेशल थैंक्यू बोला था।पार्टी के एक सीनियर लीडर ने बताया कि रायबरेली की जीत इस लिहाज से भी बड़ी है कि परिवार ने अमेठी की खोई सीट भी हासिल कर ली है। रायबरेली में राहुल को वायनाड से बड़ी जीत मिली। ऐसे में वह रायबरेली छोड़ेंगे तो यूपी में गलत राजनैतिक मैसेज जाएगा। नेहरू-गांधी परिवार का दशकों पुराना यूपी से रिश्ता भी कमजोर हो जायेगा। क्योंकि गांधी परिवार के मुखिया ने हमेशा यूपी से ही राजनीति की। पिता राजीव गांधी अमेठी और परदादा जवाहरलाल नेहरू इलाहाबाद से चुनाव लड़ते रहे हैं। रायबरेली सीट उनकी मां, दादी इंदिरा और दादा फिरोज गांधी की सीट है।

उत्तर प्रदेश में बीजेपी के हिन्दुत्व पर भारी पड़ी सपा की जातीय जुगलबंदी

अजय कुमार

दस वर्षो गे बाद अबकी से यूपी के वोटिंग पैटर्न में बड़ा बदलाव देखने को मिला। भाजपा बड़े स्तर पर पिछड़ी, यह तो सबने देखा, परंतु क्यों पिछड़ी इसको लेकर उसके अंदर भी दुविधा नजर आ रही है। जो बीजेपी 2019 में यूपी में 63 सीटें जीती थीं जो अबकी से वह 33 पर सिमट गई।

उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी को बड़ा झटका लगा है। यूपी में खराब परफारमेंस की वजह से बीजेपी केन्द्र में अपने दम पर बहुमत का भी आकड़ा नहीं पा कर पाई। भले ही एनडीए के तौर पर उसकी सरकार बनना तय लग है, लेकिन अबकी से उसके सामने चुनौती बड़ी होगी। बीजेपी का यह सारा खेल यूपी ने बिगाड़ा है। 2017 के विधान सभा चुनाव के बाद जिस तरह से अप्रत्याशित तरीके से बीजेपी आलकमान द्वारा योगी को यूपी का सीएम बनाया गया था, उसके बाद 2019 के लोकसभा चुनाव और 2022 के विधान सभा चुनाव में मोदी के साथ योगी का भी सिक्का खूब चला। यहां कोई भी चुनाव होता मोदी आगे तो योगी उनके पीछे नजर आते थे। अपने बल पर शानदार प्रदर्शन करने वाले सीएम योगी आदित्यनाथ का जादू अबकी लोकसभा चुनाव में क्यों नहीं चला यह यक्ष प्रश्न है। कहा यह भी जा रहा है कि समाजवादी पार्टी के पिछड़ा-दलित-अल्पसंख्यक (पीडीए) फार्मूला ने बीजेपी के हिन्दुत्व को हासिये पर ढकेल दिया। जबकि जमीनी हकीकत यही है कि यूपी की सियासी पिच पर भले योगी मात खा गये हों, लेकिन उनकी सरकार के कामकाज को लेकर किसी को कोई खास नाराजगी नहीं है। आज भी प्रदेश में लॉ एंड आर्डर के कारण उनकी छवि काफी बड़ी दिखती है। विकास के कार्य भी ठीकठाक चल रहे थे, ऐसे में यही कहा जा सकता है कि शायद योगी अपनी बात को मतदाताओं के सामने उतने सही तरीके से नहीं जैसा कि सपा प्रमुख अखिलेश यादव करने में सफल रहे। वहीं बसपा के वोटर को भी जब इस बात का अहसास हुआ कि बहनजी अबकी से रेस में नहीं है तो उसने भाजपा की जगह समाजवादी पार्टी का साथ ज्यादा पसंद किया, यह भी बीजेपी के लिये माइनस प्वाइंट रहा। इसकी वजह भी साफ है। दलित और उसके साथ पिछड़ों को भी इस बात का विश्वास हो गया था कि यदि मोदी मजबूत हुए तो उनका आरक्षण खत्म हो जायेगा।

बहरहाल, योगी की भविष्य की राजनीति पर लोकसभा चुनाव के नतीजे का प्रभाव पड़ना निश्चित है। एक तरफ विपक्ष उनके खिलाफ ज्यादा हमलावर होगा तो पार्टी के भीतर से भी उनके खिलाफ आवाज उठने लगेंगी। क्योंकि अक्सर ऐसी खबरें आती थीं कि योगी राज में बीजेपी के जनप्रतिनिधियों को कोई महत्व नहीं मिल रहा था और इसकी बड़ी वजह योगी को समझा जाता था। यहां तक की चौकी-थाने तक में बीजेपी नेताओं और पार्षदों की बात तो दूर विधायकों और सांसदों तक की नहीं सुनी जाती थी। यूपी में भाजपा के साथ-साथ उसके सहयोगी दलों को भी झटका लगता है। सुभासपा के बढ़ बोले नेता ओम प्रकाश राजभर अपने बेटे को चुनाव नहीं जिता पाये तो संजय निषाद की पार्टी का भी एक सीट पर खाता नहीं खुला। हॉ, राष्ट्रीय लोकदल अपनी दो और अपना दल एस की अनुप्रिया पटेल मिर्जापुर से चुनाव जीत गई हैं। वहीं, सुभासपा को घोसी लोकसभा सीट पर झटका लगा है। इंडिया गठबंधन प्रदेश की 80 में से 43 सीटें जीतने में सफल रहा। इसमें सपा की 37 सीटों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। कांग्रेस को भी 6 सीटों पर जीत हासिल हुई, लेकिन इसका श्रेय भी अखिलेश को ही दिया जा रहा है। वहीं, भाजपा के नेतृत्व में एनडीए 36 सीटों पर ही हासिल कर पाई,जिसमें भाजपा की 33 सीटें थीं। यूपी में उसके सात केन्द्रीय मंत्री चुनाव हार गये। एक सीट पर आजाद समाज पार्टी को जीत हासिल हुई।

2024 बजाज पल्सर NS400Z को खास बनाती हैं ये 5 चीजें, जानिए 1.85 लाख रुपये में क्या कुछ मिलेगा

Pulsar NS400Z का डिजाइन दूसरी पल्सर जैसा ही है। बजाज ने इस बाइक के सिल्हूट को बरकरार रखा है क्योंकि यह बहुत मशहूर हो गई है। Pulsar NS400Z में वही 373 cc यूनिट है जो डोमिनार 400 और पिछली पीढ़ी के KTM 390 Duke में पाई जाती है। Pulsar NS400Z की वर्तमान में एक्स-शोरूम कीमत 1.85 लाख रुपये है। इंडियन मार्केट में इसका कोई सीधा राइवल नहीं है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। Bajaj Auto ने हाल ही में अपनी सबसे बड़ी पल्सर के रूप में NS400Z लॉन्च की है। यह निर्माता के पल्सर लाइनअप में फ्लैगशिप मोटरसाइकिल है। इस मोटरसाइकिल की डिलीवरी इस महीने के अंत में शुरू होने वाली है। आइए, उन 5 बातों के बारे में जान लेते हैं जो इसे खास बनाती हैं।

डिजाइन

Pulsar NS400Z का डिजाइन दूसरी पल्सर जैसा ही है। बजाज ने इस बाइक के सिल्हूट को बरकरार रखा है, क्योंकि यह बहुत मशहूर हो गई है। आगे की तरफ एक नया हेडलैंप है, जिसमें अब प्रोजेक्ट सेटअप के साथ लाइटनिंग बोल्ट LED डेटाइम रनिंग लैंप हैं। इसमें एक लो-स्लंग हेडलैंप, टैंक श्राउड के साथ एक मस्कुलर फ्यूल टैंक और मौजूदा पल्सर पर पाए जाने वाले टेल लैंप डिजाइन के साथ एक पतला रियर सेक्शन है।

इंजन और गियरबॉक्स

Pulsar NS400Z में वही 373 cc यूनिट है, जो डोमिनार 400 और पिछली पीढ़ी के KTM 390 Duke में पाई जाती है। ये 8,800 rpm पर 39.5 bhp और 6,500 rpm पर 35 Nm उत्पन्न करता है। इसका गियरबॉक्स 6-स्पीड यूनिट है।

फीचर्स

Pulsar NS400Z में एलसीडी इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर है, जो ब्लूटूथ कनेक्टिविटी को सपोर्ट करता है और इसमें ऑल एलईडी लाइटिंग और डुअल-चैनल ABS भी है। इसके अलावा, NS400Z में ट्रैक्शन कंट्रोल, राइड-बाय-वायर, ABS मोड और राइडिंग मोड भी हैं।

हार्डवेयर

NS400Z में एक पेरीमीटर फ्रेम का उपयोग किया गया है, जो आगे की तरफ 43 मिमी अपसाइड डाउन फोर्क्स और पीछे की तरफ एक मोनोशॉक दिया गया है। ये मोटरसाइकिल दोनों सिरों पर डिस्क ब्रेक का उपयोग करती है।

कीमत

Pulsar NS400Z की वर्तमान में एक्स-शोरूम कीमत 1.85 लाख रुपये है। इंडियन मार्केट में इसका कोई सीधा राइवल नहीं है। हालांकि, ये KTM Duke 390 को कंपीट करती है।

मैनुअल कार चलाते समय मत करें ये गलतियां, इंजन खराब होने के साथ घट सकता है माइलेज

बहुत से लोगों का कहना है कि MT वाली कारों को चलाने का ड्राइविंग अनुभव अलग ही है। कई लोगों की आदत होती है कि जब उन्हें क्लच को दबाने की जरूरत नहीं होती है तो वे अपना बायां पैर क्लच पर ही टिका देते हैं। लंबे समय में क्लच पर लगाया गया यह हल्का दबाव इसे जला सकता है।

नई दिल्ली। भारत में अभी भी सबसे ज्यादा मैनुअल ट्रांसमिशन वाली गाड़ियों को ही पसंद किया जाता है। लोगों का कहना है कि MT वाली कारों को चलाने का ड्राइविंग अनुभव अलग ही है। हालांकि, मैनुअल कार चलाते समय कुछ चीजों का ध्यान रखना बहुत जरूरी है, जिससे निश्चित रूप से आपका ड्राइविंग एक्सपीरिएंस बेहतर होगा और आपकी कार भी अधिक फ्यूल एफिशियंट होगी। आइए, इनके बारे में जान लेते हैं।

क्लच पर पैर न रखे रहें

कई लोगों की आदत होती है कि जब उन्हें क्लच को दबाने की जरूरत नहीं होती है तो वे अपना बायां पैर क्लच पर ही टिका देते हैं। लंबे समय में क्लच पर लगाया गया यह हल्का दबाव इसे जला सकता है। इससे गाड़ी के क्लच जल्दी खराब हो जाएंगे और आपको इन्हें बदलना पड़ जाएगा।

गियर शिफ्टिंग का ध्यान रखें

जब आपको रेड सिग्नल मिले, तो बस कार को न्यूट्रल में डाल दें और क्लच छोड़ दें। जब लाइट ग्रीन हो जाए, तो कुछ सेकंड बचाने के लिए कार को पहले गियर में रखना बिल्कुल भी उचित नहीं है। इससे आपके गियर और क्लच पर अनावश्यक रूप से असर पड़ता है।

RPM की समझ रखें

जब आप मैनुअल कार चला रहे हों, तो गियर बदलना ही सब कुछ है और सही समय पर गियर बदलने से वाहन की उम्र बढ़ती है। साथ ही इंजन की सेहत और फ्यूल एफिशियंसी में भी सुधार होता है। सामान्य नियम यह है कि गियर को 2,500 और 3,000 RPM के बीच बदलना चाहिए। हालांकि, ये प्रैक्टिस आपको शुरुआत में थोड़ा परेशान कर सकती है, लेकिन समय के साथ आपको रेव्स देखने की भी जरूरत नहीं होगी। अनुभव हो जाने के बाद वाहन की आवाज ही आपको बता देगी कि गियर बदलने का सही समय कब है।

इंडियन मार्केट में जल्द लॉन्च होंगी ये 4 नई कार, समय रहते तैयार कर लीजिए बजट

Nissan India अगस्त के आसपास एक्स-ट्रेल को लॉन्च कर सकती है। इसमें ई-पावर तकनीक के बजाय 1.5 लीटर टर्बो पेट्रोल इंजन दिया जाएगा। चौथी पीढ़ी की कार्निवल आने वाले महीनों में भारत में डेब्यू करने वाली है और हाल ही में इसे बिना किसी दिखावे के देखा गया था। 5-Door Thar को 15 अगस्त 2024 को लॉन्च किया जाना है।

नई दिल्ली। भारतीय ऑटोमोटिव उद्योग 2024 में ढेर सारे नए मॉडल पेश करने की तैयारी कर रहा है। हम आपके लिए महिंद्रा, किआ, निसान और मर्सिडीज-बेंज जैसे प्रमुख ब्रांड द्वारा आने वाले दिनों में पेश की जाने वाली 4 नई कारों की लिस्ट लेकर आए हैं। आइए, इनके बारे में जान लेते हैं।

Nissan X-Trail

Nissan India अगस्त के आसपास एक्स-ट्रेल को लॉन्च कर सकती है। इसमें ई-पावर तकनीक के बजाय 1.5 लीटर टर्बो पेट्रोल इंजन दिया जाएगा। इस एसयूवी को 2022 के मध्य में वैश्विक स्तर पर एक महत्वपूर्ण अपडेट मिला था और इसे कई बार स्थानीय सड़कों पर देखा गया है। शुरुआत में इसे पूरी तरह से निर्मित (CBU) रूट के माध्यम से देश में आयात किया जाएगा और सीमित संख्या में बेचा जाएगा।

New-Gen Kia Carnival

चौथी पीढ़ी की कार्निवल आने वाले महीनों में भारत में डेब्यू करने वाली है और हाल ही में इसे बिना किसी दिखावे के देखा गया था। अपने पिछले मॉडल से काफी अलग, यह नया मॉडल संभवतः 7 और 9-सीटर कॉन्फिगरेशन पेश करेगा। इनोवा हाइक्रॉस के टॉप-स्पेक वेरिएंट को टक्कर देने के लिए तैयार है। इसमें आधुनिक कम्फर्ट, सुरक्षा और सुविधा आधारित सुविधाओं के साथ तकनीक से भरपूर इंटीरियर होगा।

Mahindra Thar 5-Door

5-Door Thar को 15 अगस्त, 2024 को लॉन्च किया जाना है। इसमें मौजूदा तीन दरवाजों वाले मॉडल की तुलना में बड़े आकार की विशेषताएं हैं। कई तरह के वेरिएंट में उपलब्ध, इसमें 1.5L डीजल, 2.2L डीजल और 2.0L पेट्रोल इंजन सहित कई इंजन विकल्प होंगे, जिसमें मैनुअल और ऑटोमैटिक दोनों ट्रांसमिशन विकल्प होंगे।

इसके बाहरी हिस्से में मामूली बदलाव किए जाएंगे, इंटीरियर में बड़े टचस्क्रीन डिस्प्ले, डिजिटल कंसोल, एडास, 360-डिग्री कैमरा और कई अन्य अपडेट सहित महत्वपूर्ण अपडेट किए जाएंगे।

Mercedes-Benz EQA

2024 Mercedes-Benz EQA भारतीय बाजार में 8 जुलाई को आने के लिए तैयार है। ये ब्रांड के EQ परिवार का विस्तार करते हुए EQE, EQS और EQB की श्रेणी में शामिल होने वाला चौथा मॉडल है।

Volvo XC40 Recharge और BMW iX1 जैसी गाड़ियों के साथ स्थानीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने वाली EQA को पिछले साल की शुरुआत में अंतरराष्ट्रीय बाजारों में एक उल्लेखनीय अपडेट मिला।

इलेक्ट्रिक क्रॉसओवर अपने EQA 250+ ट्रिम में 560 किलोमीटर की WLTP-रेटेड रेंज प्रदान करती है, जो 70.5 kWh बैटरी पैक से लैस है। विदेशी बाजारों के लिए EQA 250, EQA 300 4Matic और EQA 350 4Matic जैसे वेरिएंट थोड़े छोटे 66.5 kWh बैटरी यूनिट के साथ उपलब्ध हैं।

निसान मैग्नाइट को कम दाम में खरीदने का गोल्डन चांस! इन वेरिएंट्स पर मिल रही 1.35 लाख रुपये की छूट

परिवहन विशेष न्यूज

निसान मोटर इंडिया ने Weekend Carnival की घोषणा की है। इसे भारत में कंपनी के डीलरशिप नेटवर्क पर 8-9 जून और 15-16 जून 2024 को आयोजित किया जाएगा। यह ध्यान रखना जरूरी है कि ये लाभ MT XE और AMT XE वेरिएंट पर लागू नहीं हैं। कार्निवल के दौरान मेहमान बुकिंग पर उपहार या एक्सेसरीज पा सकते हैं जिसमें GEZA SE मॉडल के लिए कुछ डील शामिल हैं।

नई दिल्ली। निसान मोटर इंडिया ने Weekend Carnival की घोषणा की है। इसे भारत में कंपनी के डीलरशिप नेटवर्क पर 8-9 जून और 15-16 जून, 2024 को आयोजित किया जाएगा। निसान ने NMIPL Loyalty Program पेश किया है, जो Magnite पर 1,35,100 रुपये तक के लाभ प्रदान करता है। इन लाभों में विशेष एक्सचेंज और लॉयल्टी ऑफर, 3-वर्षीय प्री-पेड मेंटेनेंस प्रोग्राम, विशेष फाइनेंस विकल्प और बहुत कुछ शामिल हैं।

केवल इन वेरिएंट पर मिलेगी छूट

यह ध्यान रखना जरूरी है कि ये लाभ MT XE और AMT XE वेरिएंट पर लागू नहीं हैं। कार्निवल के दौरान, मेहमान बुकिंग पर उपहार या एक्सेसरीज पा सकते हैं, जिसमें GEZA SE मॉडल के लिए कुछ डील शामिल हैं। इसके अलावा, एक्सेसरीज या छूट जीतने के लिए लकी ड्रा भी हो रहा है।

निर्माता ने हाल ही में मई 2024 के लिए मजबूत बिक्री के आंकड़ों की घोषणा की, जिसमें कुल थोक बिक्री 6,204 यूनिट तक पहुंच गई। यह अप्रैल 2024 (3,043 यूनिट) की तुलना में 104 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि और मई 2023 (4,631 यूनिट) की तुलना में 34 प्रतिशत की साल-दर-साल वृद्धि दर्शाता है।

डीलरशिप नेटवर्क बढ़ाएगी कंपनी

निसान इंडिया देश भर में अपने डीलरशिप नेटवर्क का लगातार विस्तार कर रही है। श्रीनगर, सलेम, दिल्ली और दुर्गापुर में हाल ही में जोड़े गए डीलरशिप नेटवर्क के साथ उनके कुल टचपॉइंट 272 हो गए हैं, जो देश भर में ग्राहकों के लिए बेहतर बिक्री और सेवा अनुभव प्रदान करते हैं।

Nissan Magnite का GEZA CVT

निसान इंडिया ने मैग्नाइट लाइनअप में GEZA CVT स्पेशल एडिशन भी पेश किया है। 9.84 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) की कीमत वाला यह वेरिएंट प्रीमियम फ्लेयर की तलाश करने वाले बजट के प्रति सजग खरीदारों के लिए ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन विकल्प प्रदान करता है। GEZA CVT स्पेशल एडिशन स्पोर्टियर कुरो ब्लैक एडिशन से नीचे आता है और 10 लाख रुपये से कम कीमत वाले अपने सेगमेंट में सबसे किफायती CVT टर्बो विकल्प का खिताब अपने नाम करता है।

2024 निसान मैग्नाइट गीजा एडिशन की मुख्य विशेषताओं में 9 इंच का बड़ा एचडी टचस्क्रीन डिस्प्ले, वायरलेस एपल कारप्ले और एंड्रॉइड ऑटो कनेक्टिविटी और प्रीमियम जेबीएल स्पीकर सिस्टम शामिल हैं। अतिरिक्त सुविधा और सुरक्षा के लिए, गीजा सीवीटी स्पेशल एडिशन रियर-व्यू कैमरा से लैस है।

निजी बदलावों से ही बदलेगा समाज

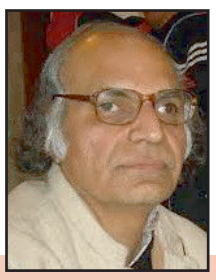

भारत डोगरा

व्यक्तिगत जीवन में समता का अर्थ यह है कि जितनी भी संपत्ति या आय हमारे पास हो, अपनी जरूरतों और जरूरी बचत को पूरा करने के बाद वह गरीबी कम करने के लिए या किसी इतने ही जरूरी सार्वजनिक हित के कार्य में खर्च होनी चाहिए। समता का एक अर्थ यह भी है कि अपने से कमजोर आर्थिक हैसियत वाले जितने भी लोग हमारे दैनिक जीवन में सम्पर्क में आएं, उनसे हम न्यायसंगत व्यवहार करें।

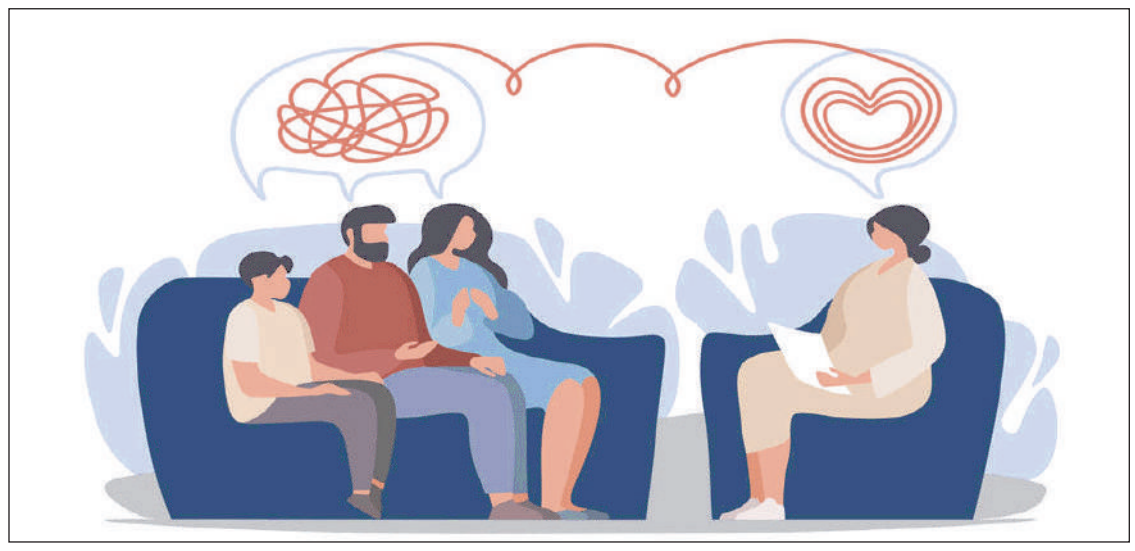

जो हमारी कुंठाएं हैं, दूसरों के प्रति संकीर्ण सोच है, उससे मुक्त होने का प्रयास कर, अपने आसपास एक खुला, मुक्त माहौल बनाना चाहिए। दूसरों का दुःख-दर्द कम करने, उन पर हावी न होने, सह अस्तित्व और सहयोग के सिद्धांत केवल नजदीकी लोगों से हमारे संबंधों पर लागू नहीं होते, यह प्रकृति से, प्रकृति के विभिन्न रूपों से, विभिन्न जीव-जंतुओं से भी हमारे संबंधों पर लागू होते हैं। प्रकृति की हरियाली को बढ़ाएं, मूक प्राणियों के दुःख-दर्द को कम करें, यह भी जीवन का एक बहुत सार्थक पक्ष है। आदर्श जीवन कुछ बहुत ख्याति प्राप्त या ऊंचे पदों पर पहुंचे लोगों की बपौती नहीं है। एक व्यक्ति, एक परिवार का सार्थक बदलाव भी दुनिया को बेहतर बनाने के प्रयासों में उसकी महत्वपूर्ण देन है। निराशा के कारण हैं तो आशा की संभावनाएं भी हैं। निराशा के बादलों से निकल कर आशा के प्रकाश को फैलाना होगा और छोटे से छोटे, कमजोर से कमजोर व्यक्ति की इस प्रयास में महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। फिलहाल इतना हमारे नियंत्रण में जरूर है कि बिना कोई देर किए हम आदर्श जीवन जीएं'

सब जानते हैं कि समाज को बदलने की शुरुआत निजी जीवन के बदलावों से होती है, लेकिन आम तौर पर इस जानी-पहचानी अवधारणा को हम अनदेखा करते रहते हैं। जाहिर है, इसे बार-बार याद दिलाते रहने की जरूरत है। इस बार इस लेख में इसी विषय को खंगालने की कोशिश करेंगे। समाज-सुधार की चर्चा तो कई स्तरों पर होती है, पर व्यक्तिगत जीवन में सुधार की चर्चा कम हो गई है। अब चर्चा व्यक्तिगत स्वतंत्रताओं की अधिक है। व्यक्तिगत सुधार या व्यक्ति के आदर्शों की नहीं, पर समाज तो बहुत से व्यक्तियों से मिलकर ही बनता है और व्यक्तिगत जीवन में सुधार व आदर्श के महत्त्व के बिना समाज सुधार भी आगे बढ़ सकेगा, इसकी संभावना कम है। सवाल यह है कि आदर्श समाज की सोच के अनुरूप व्यक्तिगत जीवन जीना है तो उसकी अनिवार्य शर्तें क्या हैं। संभवतः सबसे बुनियादी बात यह है कि हमारा जीवन सादगी और समता पर आधारित होना चाहिए। आधुनिक जीवन में यह धारणा बहुत मान्यता प्राप्त कर चुकी है कि जितनी अधिक उपभोक्ता वस्तुएं प्राप्त कर सको, जीवन उतना ही बेहतर होगा, जितना वैभवकारी घर बना सको, उतना ही जीवन सार्थक होगा। दूसरी ओर सादगी की अवधारणा बताती है कि हम अपने व अपने परिवार के सदस्यों को कोई शारीरिक कष्ट दिए बिना अपनी जरूरतों को जितना कम रख सकें, जीवन की सार्थकता उतनी ही बढ़ती है। चूंकि एक व्यक्ति और दूसरे व्यक्ति, एक परिवार और दूसरे परिवार की परिस्थितियों में बहुत अंतर हो सकता है, अतः सादगी का आदर्श सामने रखने के लिए उपभोक्ता वस्तुओं की कोई सूची नहीं बनाई जा सकती। बुनियादी बात हमारे सोच की है, जीवन मूल्यों की है। एक बार हमने इस सोच को ऐसा बना लिया कि सार्थकता उपभोक्ता वस्तुओं को बढ़ाने में नहीं, यथासंभव कम करने में है, तो हम सादगी के रास्ते पर आ चुके हैं।

व्यक्तिगत जीवन में समता का अर्थ यह है कि जितनी भी संपत्ति या आय हमारे पास हो, अपनी जरूरतों और जरूरी बचत को पूरा करने के बाद वह गरीबी कम करने के लिए या किसी इतने ही जरूरी सार्वजनिक हित के कार्य में खर्च होनी चाहिए। समता का एक अर्थ यह भी है कि अपने से कमजोर आर्थिक हैसियत वाले जितने भी लोग हमारे दैनिक जीवन में सम्पर्क में आएं, उनसे हम न्यायसंगत व्यवहार करें। चाहे वे हमारे नियमित कर्मचारी हों या घरेलू कार्य में सहयोग करने वाले, रिक्शा चालक या कुली, उनके प्रति हमारा व्यवहार यही होना चाहिए कि उनसे जितना सहयोग हम अपनी सीमाओं के बीच कर सकते हैं, उतना अवश्य करें। ईमानदारी एक अन्य बहुत महत्वपूर्ण गुण है जिसकी चर्चा प्रायः होती है, पर ईमानदारी अपने आप में पर्याप्त नहीं है। ईमानदारी के साथ समता और सादगी के आदर्शों को भी जीवन में अपनाना जरूरी है। समता और सादगी के आदर्श आपस में बहुत नजदीकी तौर पर जुड़े हुए हैं। इन दोनों आदर्शों को अपनाने से जीवन में बहुत-सी विकृतियां अपने आप ही दूर हो जाती हैं, कई बेकार की बातों से समय बच जाता है और तरह-तरह के रचनात्मक और सार्थक कार्यों के लिए समय उपलब्ध होने लगता है। जो उपभोक्ता वस्तुएं समाज और पर्यावरण के स्तर पर हानिकारक सिद्ध हो चुकी हैं, उनसे दूर रहना आवश्यक है। तंबाकू, शराब, अन्य तरह के नशीले पदार्थ, दुव्यर्सन व ऐय्याशी की सामग्री का किसी भी आदर्श जीवन में स्थान नहीं होना चाहिए और कम से कम अपनी कमजोरी को छोडने की इच्छा जरूर होनी चाहिए। यह भी उतना ही स्पष्ट है कि आदर्श व्यक्तिगत जीवन में किसी भी धर्म, जाति, समुदाय, लिंग के प्रति भेदभाव या नफरत की जगह नहीं हो सकती। व्यक्तिगत जीवन इन सभी तरह के भेदभावों और उनसे उत्पन्न कुंठाओं और विकृतियों से मुक्त होना चाहिए। आदर्श जीवन के लिए किन गुणों की आवश्यकता है, इसकी तो बहुत लंबी सूची तैयार की जा सकती है, पर यदि हम एक मूल बात को पकडना चाहते हैं तो वह यह है कि हम दूसरों को दुःख-दर्द न दें, अपितु जहां तक संभव हो, जितना अवसर हमें मिल सके, हम दूसरों का दुःख-दर्द कम करने का ही प्रयास करें।

ईमानदारी से अपनी आजीविका तो हमें कमानी ही है, अपनी व अपने परिवार की बुनियादी जरूरतें भी पूरी करनी हैं, यह जिम्मेदारी निभाते हुए जितना हमसे बन सके, हम दूसरों का दुःख-दर्द कम कर सकते हैं, तो वह प्रयास हम जरूर करें, उससे पीछे न हटें। अपने नजदीकी संबंधों में प्रयास और सद्भावना होने के बावजूद प्रायः हम रिश्तों में हावी होने, अपनी हस्ती स्थापित करने का प्रयास करते हैं। इस कारण नाहक बहुत दुःख-दर्द उत्पन्न होता है। नजदीकी मानवीय संबंधों को एक-दूसरे पर हावी होने के स्थान पर 'हमारी भी जय हो, तुम्हारी भी जय हो' के सिद्धांत पर जीना चाहिए। जो हमारी कुंठाएं हैं, दूसरों के प्रति संकीर्ण सोच है, उससे मुक्त होने का प्रयास कर, अपने आसपास एक खुला, मुक्त माहौल बनाना चाहिए।

दूसरों का दुःख-दर्द कम करने, उन पर हावी न होने, सह अस्तित्व और सहयोग के सिद्धांत केवल नजदीकी लोगों से हमारे संबंधों पर लागू नहीं होते, यह प्रकृति से, प्रकृति के विभिन्न रूपों से, विभिन्न जीव-जन्तुओं से भी हमारे संबंधों पर लागू होते हैं। प्रकृति की हरियाली को बढ़ाएं, मूक प्राणियों के दुःख-दर्द को कम करें, यह भी जीवन का एक बहुत सार्थक पक्ष है। आदर्श जीवन कुछ बहुत ख्याति प्राप्त या ऊंचे पदों पर पहुंचे लोगों की बपौती नहीं है। एक व्यक्ति, एक परिवार का सार्थक बदलाव भी दुनिया को बेहतर बनाने के प्रयासों में उसकी महत्वपूर्ण देन है। निराशा के कारण हैं तो आशा की संभावनाएं भी हैं। निराशा के बादलों से निकल कर आशा के प्रकाश को फैलाना होगा और छोटे से छोटे, कमजोर से कमजोर व्यक्ति की इस प्रयास में महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। समाज सुधार का रास्ता सरल नहीं है और कह नहीं सकते कि विभिन्न समस्याओं के कारण किसी व्यक्ति या संगठन को इसमें कितनी सफलता मिलेगी। फिलहाल इतना हमारे नियंत्रण में जरूर है कि बिना कोई देर किए हम अपने निजी जीवन को आदर्श जीवन के नजदीक ले आएं या इस दिशा में सतत प्रयास करते रहें।

संपादक की कलम से

भाजपा से क्यों रूठे राम?

अयोध्या के राम मंदिर ने भाजपा की चुनावी मदद क्यों नहीं की? राम मंदिर आम चुनाव, 2024 का प्रमुख मुद्दा क्यों नहीं बन पाया? क्या प्रभु राम भाजपा से रूठ गए हैं? श्रीराम की मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा का समारोह 22 जनवरी, 2024 को इस मकसद से तय किया गया था कि राम मंदिर चुनावों तक एक प्रमुख मुद्दा बना रहेगा और उसके मद्देनजर ध्रुवीकरण होगा। भाजपा को चुनावी लाभ होगा। राम मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा का आयोजन सतही तौर पर किसी ने भी किया हो, लेकिन उसके सूत्रधार, प्रथम यजमान प्रधानमंत्री मोदी ही थे। फोकस उन्हीं पर था। एक रामभक्त की तरह, पैदल चलते हुए और आरती की थाली लेकर, प्रधानमंत्री ही राम-प्रतिमा तक गए थे। पूजा-पाठ की तमाम विधियां निभाई थीं। उस आयोजन के बाद बूथ स्तर के काडर को निर्देश दिए गए थे कि भक्तों को अयोध्या तक लाया जाए, ताकि वे सहजता से प्रभु राम के दर्शन कर सकें। अयोध्या के पुनरोत्थान, विकास और विस्तार पर भाजपा की डबल इंजन सरकारों ने 70,000 करोड़ रुपए से अधिक खर्च कर दिया था। अयोध्या का चेहरा ही बदल दिया, लेकिन अयोध्या के मतदाताओं ने भाजपा उम्मीदवार लल्लू सिंह को ही 54,000 से अधिक मतों से हरा दिया। लल्लू सिंह को 2014 और 2019 में लगातार दो बार अयोध्या (फैजाबाद) का सांसद चुना गया था। यही नहीं, 26 केंद्रीय मंत्री भी चुनाव हार गए। उनमें स्मृति ईरानी, महेंद्र पांडेय, कौशल किशोर, साध्वी निरंजन ज्योति, अजय मिश्रा, भानुप्रताप वर्मा आदि केंद्रीय मंत्री उप्र से ही सांसद चुनकर आए थे। इस बार अयोध्या के इर्द-गिर्द 4-5 अन्य संसदीय क्षेत्रों में भी भाजपा को पराजित किया गया। भाजपा का वोट प्रतिशत 50 फीसदी से घटकर 41 फीसदी हो गया और वह 29 सीट नीचे फिसल गई, जबकि सपा का वोट प्रतिशत 18.11 फीसदी से उछल कर 33.5 फीसदी हो गया। सपा की इस चुनाव में ही 32 सीटें बढ़ गईं। कांग्रेस के हिस्से भी 6 सांसद आ गए, जिसके मात्र 2 विधायक हैं।

प्रभु राम भाजपा से एकदम क्यों रूठ गए? विशेषज्ञ मान रहे थे कि भाजपा 80 में से 70 से अधिक सीटें तो जीत सकती है। उप्र के कारण ही भाजपा लोकसभा में स्पष्ट बहुमत हासिल करने में नाकाम रही। सवाल है कि क्या संविधान बदलने, लोकतंत्र खत्म करने, आरक्षण की व्यवस्था समाप्त करने सरीखे भ्रामक मुद्दे इतने प्रभावशाली साबित हुए कि रामभक्तों ने भी भाजपा को खारिज कर दिया और उस पार्टी को वोट दिए, जिसके मुख्यमंत्री ने रामभक्तों, कारसेवकों पर गोलियों की बौछार करवा उनकी हत्याएं कराई थीं। अयोध्या (फैजाबाद) के पूर्व सांसद लल्लू सिंह ने भी बयान दिया था कि भाजपा को 400 सीटें इसलिए चाहिए, ताकि संविधान में अपेक्षित बदलाव किए जा सकें। विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' ने इसकी गलत व्याख्या की कि भाजपा संविधान को ही बदलना चाहती है। संविधान बदल जाएगा, तो आरक्षण की व्यवस्था भी समाप्त हो जाएगी। इसका जबरदस्त असर दलितों, आदिवासियों, ओबीसी पर पड़ा और उन्होंने रामभक्त होते हुए भी भाजपा के खिलाफ लामबंद होकर मतदान किया। मतों का ध्रुवीकरण ऐसा हुआ कि प्रधानमंत्री मोदी वाराणसी सीट से 1.52 लाख से कुछ ज्यादा मतों से ही जीते।

2019 में वह चार लाख से अधिक मतों से जीते थे। प्रधानमंत्री मोदी पूरे चुनाव के दौरान जनता को आश्वस्त करते रहे कि अब बाबा अंबेडकर भी संविधान को बदल नहीं सकते। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और आगे भी रहेगा, लेकिन आरक्षित जमात में विपक्ष के आरोपों का खूब असर हुआ। अयोध्या के कुछ स्थानीय मुद्दे भी रहे होंगे, अधिग्रहण की गई जमीनों के पर्याप्त मुआवजे नहीं दिए गए होंगे, नतीजतन प्रतिक्रिया भाजपा के खिलाफ गई और चुनाव-परिणाम सामने हैं। फिर भी अकेली भाजपा ने लोकसभा की 240 सीटें जीती हैं, जो अभूतपूर्व जनादेश है। 1985 में देश ने 404 सीटों का जो जनादेश कांग्रेस के पक्ष में दिया था, उसके बाद 232 से अधिक कोई भी पार्टी जीत नहीं पाई है। अयोध्या भाजपा के लिए सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक भूमि है, बेशक पार्टी इसे 'आस्था' मानती रहे।

चर्चा

छोटा हिमाचल, सबक बड़े-4

हिमाचल के समग्र राजनीतिक परिदृश्य को चुनाव परिणामों के बाद तय करना होगा कि जनता ने सुना क्या और सुनाया क्या। जनता ने अपने अधिकारों, सियासत के नारों, सरकार के वादों और केंद्र पर निर्भर पुरस्कारों को सुना है। इसी जनता ने अपने नुमाइंदों के मार्फत हिमाचल व केंद्र में आने वाली सरकार को बहुत कुछ सुनाया भी है। हमीरपुर संसदीय क्षेत्र से पांचवीं बार अनुराग ठाकुर की ताजपोशी के आगे बाकी सांसद फीके साबित हुए हैं। चाहे शांता कुमार हों या किशन कपूर, इनके दौर से कहीं आगे अनुराग ठाकुर निकले हैं तो समूचे प्रदेश के लिए सोचने वाला एक अदद केंद्रीय मंत्री चाहिए। बेशक अनुराग ठाकुर का पद और कद हमीरपुर संसदीय क्षेत्र के लिए बहुत कुछ कर गया, लेकिन उन्हें पूरे प्रदेश का नेता बनना है, तो रेल-हवाई विस्तार के अलावा पर्यटन, खेल पर्यटन, धार्मिक पर्यटन व औद्योगिक विस्तार की परियोजनाओं को अपने संसदीय क्षेत्र से बाहर भी देखना होगा। जरूरी नहीं कि रेल विस्तार करते हुए केवल हमीरपुर ट्रेन पर चढ़ा जाए। आसानी से अगर अंब-अंदौरा तक पहुंची ट्रेन को नब्बे डिग्री उत्तर की ओर बढ़ाया जाए तो केंद्रीय हिमाचल में रेल विस्तार ज्वालामुखी के मार्फत, कांगड़ा, हमीरपुर, बिलासपुर व मंडी तक पहुंचेगा। इसी तरह रानीताल से मुबारकपुर तक प्रस्तावित फोरलेन परियोजना के ताले खोलने पड़ेंगे। आश्चर्य यह कि केंद्रीय मंत्री रहते हुए भी वह प्रदेश के खेल ढांचे तथा रेडियो-टीवी विस्तार में वांछित नहीं कर पाए। नई सरकार की संभावना में, भाजपा की सत्ता में उनका स्थान निस्संदेह तरक्की पर रहेगा, लेकिन प्रदेश की निगाह में उनका रुतबा इस पारी में व्यापकता देखना चाहता है। यह चुनौती बाकी सांसदों के लिए भी रहेगी कि वे अपने-अपने संसदीय क्षेत्रों में कुछ न कुछ करके दिखाएं। अगर चारों सांसद प्रदेश के समग्र विकास में सोचें, विशेष आर्थिक या रेलवे पैकेज की मांग करें और पंजाब पुनर्गठन की बंद फाइलों से हिमाचल के हितों को मुक्त कराएं, तो सौ फीसदी परिणाम देकर भाजपा को जितवाने के मायने भी सफल होंगे। हमें यह नहीं भूलना चाहिए और यह भाजपा को याद रखना होगा कि कांगड़ा ने आनंद शर्मा जैसे कद्दावर, अनुभवी तथा अपने समय के सफल केंद्रीय मंत्री के बजाय नए नवेले डा. राजीव भारद्वाज पर मोहर लगाई है। उन्हें शांता कुमार की राजनीतिक विरासत मिल रही है, तो पूर्व केंद्रीय मंत्री की ड्रीम परियोजनाओं को धरातल पर उतारना होगा। भले ही हिमाचल ने कंगना रणोत को हल्के से लिया, लेकिन जीतने के बाद वह अपनी प्राथमिकताएं गिन रही हैं। वह स्वास्थ्य, शिक्षा के अलावा कनेक्टिविटी पर जोर दे रही हैं। मंडी व कुल्लू जैसे शहरों को भविष्य की स्मार्ट सिटी बनाना चाहती हैं, तो उन्हें अपनी सरकार की प्रथम घोषणाओं में देश की स्मार्ट सिटी परियोजनाओं को पुनर्जीवित करवाते हुए यह आदेश पारित करवाना होगा कि हर संसदीय क्षेत्र में कम से कम एक स्मार्ट सिटी बनेगी। इसी के साथ कांगड़ा व शिमला के सांसदों को धर्मशाला व शिमला की स्मार्ट सिटी परियोजनाओं का कार्यकाल बढ़ाते हुए इनके विभिन्न लक्ष्यों के लिए वित्तीय सहायता प्राप्त करने के लिए, अपनी सरकार को विवश करना होगा। पिछले सवा साल में हमने कांग्रेस बनाम भाजपा के खेल की परिणति चुनावों में देखी है। खूब लड़े होंगे या परिणामों की फेहरिस्त में अपने-अपने विमर्श, तर्क और तंज लेकर एक दूसरे को कोस रहे होंगे, लेकिन याद रखना होगा कि हिमाचल एक संसाधन विहीन राज्य है जिसे आत्मनिर्भरता का आत्मविश्वास दिलाने के लिए सांसदों, विधायकों और राज्य सरकार को एक साथ प्रयास करना होगा।

प्रताप सिंह पटियाल

जनादेश का सम्मान करे सियासत

लोकतंत्र के पर्व में शिकस्त व जीत का सिलसिला जारी रहेगा, मगर अहम पहलू यह है कि लोकतंत्र में लोगों का भरोसा कायम रहना चाहिए। देश की सियासत को जनता का जनादेश पूरी अकीदत से स्वीकार करना होगा'

मौजूदा वक्त में मुल्क की सियासत जश्न-ए-मसर्रत में मसरूर है। देश की फिजाओं में भी सियासी तरन्नुम की धुन महसूस की जा सकती है। देश के करोड़ों मतदाताओं ने अपने बेशकीमती वोट की ताकत से मैदान-ए-सियासत में किस्मत आजमा रहे सियासी रहनुमाओं को जम्हूरियत की सबसे बड़ी पंचायत में पहुंचा कर लोकतंत्र की मजबूती का एक और सुनहरा मजमून लिख दिया। सियासत के कई मुनाजिर सियासी बज्म में चुनावी जीत का श्रेय लेने में लगे हैं, जबकि लोकतंत्र में जनता का जनादेश सर्वोपरि है। हैरत यह भी है कि मतदाताओं ने अलगाववाद की हिमायत करने वाले कुछ सियासी रहनुमाओं को भी देश की संसद में भेज दिया है। चुनावी रैलियों से लेकर जंनसम्पर्क व रोड शो तथा सोशल मीडिया तक चुनावों का प्रचार हुआ। सियासी दलों की प्रतिष्ठा का सवाल बन चुके चुनावों में सियासी विरासत को बचाने की जद्दोजहद भी जारी थी, मगर मतदाताओं के खामोश फैसले ने देश की सियासत को चौंका दिया है। एग्जिट पोल को लेकर सियासत के ज्योतिषाचार्यों के दावे धराशायी हो गए। हालांकि देश में एक बार फिर गठबंधन की सियासत का दौर शुरू हो गया है। कहर बरपाती गर्मी के बीच लोगों ने मतदान केंद्रों की कतारों में खड़े होकर मताधिकार का प्रयोग करके लोकतंत्र के प्रति अपना फर्ज अदा कर दिया। यह दीगर बात है कि अगले पांच वर्षों तक जनप्रतिनिधि सोशल डिस्टेंसिंग के नियमों का पालन पूरी शिद्दत से करेंगे। चुनावों के बाद आम लोगों को अपने सियासी रहनुमां के दीदार दुर्लभ हो जाते हैं। देश का हर चुनाव अपने पीछे कई यादें छोड़ जाता है।

मौजूदा लोकसभा चुनाव में लोगों में मतदान के प्रति उत्साह का माहौल कम था। कई राज्यों में मतदान का प्रतिशत कम रहा, मगर आरोप-प्रत्यारोप के भयानक दौर में शराफत व अदब की हदूद को तोडने वाली भाषा के चलते सियासत की दर्जा-ए-हरारत बुलंदी पर पहुंच चुकी थी। गुफ्तगू के दौरान लफ्जों का इस्तेमाल व बात करने का सलीका किसी भी इनसान की तरबियत व परवरिश का बेहतरीन सबूत होता है। जहरीले लफ्जों से उपजे गहरे जख्म दशकों तक नहीं भरते। इंतखाबी तश्हीर के दौरान सियासी रहनुमाओं की जुबान से निकले तीरनुमां लफ्जों ने मुल्क की सियासत को काफी हद तक मफलूज कर दिया है। सियासत के किरदार का अनोखा अंदाज है कि मुल्क में सियासी रहनुमाओं को ही दानिश्वर माना जाता है। देश की अफसरशाही व नौकरशाही तथा तमाम व्यवस्थाएं सियासत के आगे नतमस्तक रहती हैं। आम लोग ज्यादातर समस्याओं के समाधान के लिए जनप्रतिनिधियों से ही अपेक्षा रखते हैं। भोली-भाली विरासत के लोग सियासतदानों के आश्वासनों पर अक्सर विश्वास कर लेते हैं, जबकि सियासत की कथनी और करनी में फर्क होता है।

सियासत एक ऐसा पेशा है जिसमें अपने सियासी दुर्ग फतह करने के लिए सियासी रहनुमाओं के झूठ बोलने पर, मौके की नजाकत को भांपकर जाति-मजहब का कार्ड खेलना, वोट बैंक साधने के लिए जराफत भरे अंदाज में लोकलुभावन वादों की बिसात बिछाना तथा चुनावी प्रचार के दौरान की गई घोषणाओं से मुकरने पर कोई कानूनी पाबंदी नहीं है। इसीलिए सियासत के मिजाज से कभी सदाकत की महक नहीं आती। सियासी रहनुमाओं के किरदार में

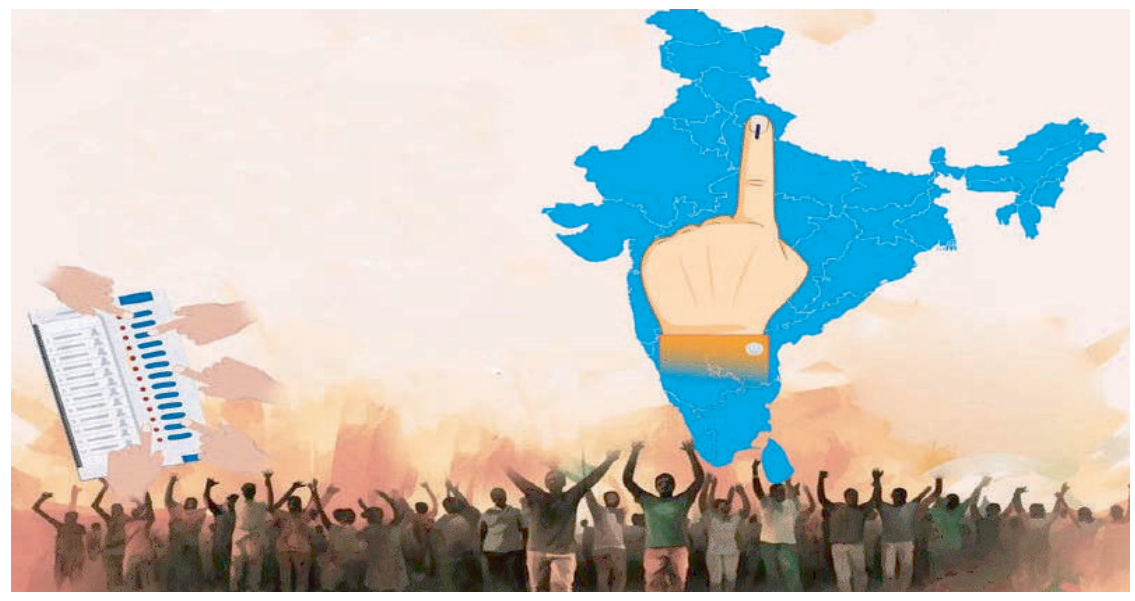

मोहिब्ब-ए-वतन का अक्स नहीं दिखाई देता। इंतखाबी तश्हीर में हिकारत भरे अल्फाज व बड़बोली भाषणबाजी के आगे निर्वाचन आयोग भी बेबस हो चुका है। लेकिन सत्ता की दहलीज पर पहुंचने की होड़ में जनसैलाब को अमर्यादित भाषा से उकसाना तथा लोगों के जज्बात आहत करने की कारकर्दगी मतदाताओं के साथ पूरे जम्हूरी निजाम की तौहीन है। चुनाव आयोग को इस विषय पर संज्ञान लेना होगा। नवगठित मरकजी हुकूमत से देश के करोड़ों लोगों को उम्मीदें रहेंगी, मगर सबसे ज्यादा उम्मीद युवा वर्ग को है। कुछ दर्द इनसान का सुख-चैन छीन कर उसे खामोशी व तन्हाई के आलम में जीने को मजबूर कर देते हैं। बेरोजगारी के सैलाब में फंस चुके युवा वर्ग का हाल कुछ ऐसा ही है। लाइलाज हो चुकी बेरोजगारी के अजाब से युवा वर्ग मानसिक तौर पर मामूर हो चुका है। हर वर्ष हजारों युवा जमीन-जायदाद गिरवी रखकर रोजगार की तलाश में डंकी रूट के जरिए विदेश जाते हैं तथा वहां की सुरक्षा एजेंसियों द्वारा गिरफ्तार किए जाते हैं। विदेशों में पढ़ाई करने वाले भारतीय मूल के छात्रों व रोजगार में लगे युवाओं पर नस्लीय हमले व हत्याएं आम बात हो चुकी है। देश में नशा माफिया के राडार पर भी बेरोजगार युवा हैं। नशाखोरी के मामलों में सलाखों के पीछे भी ज्यादातर युवा वर्ग है। चुनावों में विपक्षी दलों ने बेरोजगारी व महंगाई जैसे ज्वलंत मुद्दों पर जोरदार ताकीद पेश थी। चुनावी संग्राम में नारों व जुमलों का अहम प्रभाव रहता है। लेकिन सियासत चुनावी दौर में मुफ्तखोरी की खैरात व लोकलुभावन वादों से लोगों को लुभाने का प्रयास करती है। खोखले आश्वासनों से लोगों को खुश करने की कोशिश की जाती है, जबकि युवा वर्ग के मन को पढने की जरूरत है।

आम लोगों की वास्तविक समस्याओं को महसूस करने की जरूरत है। विश्व में सबसे ज्यादा युवा आबादी की हैसियत रखने वाले भारत में बेरोजगारी की बढ़ती दर तथा मतदान का कम होता प्रतिशत लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए चिंताजनक मसला बन रहा है। मतदान को लेकर लोकतंत्र की बुनियाद मतदाताओं की बेजारी व मतदान के प्रति घटती दिलचस्पी तथा लाखों मतदाताओं द्वारा 'नोटा' के इस्तेमाल पर निष्पक्ष तौर पर रायशुमारी होनी चाहिए। आखिर विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश में मतदान का प्रतिशत कम क्यों हो रहा है? चूंकि आधुनिक दौर में लोकतांत्रिक प्रणाली को ही श्रेष्ठ व्यवस्था माना जाता है। लोकतंत्र के पर्व में शिकस्त व जीत का सिलसिला जारी रहेगा, मगर अहम पहलू यह है कि लोकतंत्र में लोगों का भरोसा कायम रहना चाहिए ताकि लोकतांत्रिक व्यवस्था का वजूद महफूज रहे। बहरहाल लोकतंत्र का आधार लोगों के मत पर निर्भर करता है। देश की सियासत को जनता का जनादेश पूरी अकीदत से स्वीकार करना होगा। युवा वर्ग के लिए रोजगार उपलब्ध कराने का मुद्दा सरकारों की प्राथमिकता

भितरघात पर मंथन

बहुत महत्वपूर्ण बैठक चल रही है। बैठक में मंथन हो रहा है। जीत पर भी मंथन हो रहा है और हार पर भी मंथन हो रहा है। इसलिए यह बैठक बहुत ही महत्वपूर्ण है। बैठक के एजेंडे में भितरघात पर मंथन भी शामिल है। भितरघात जिन-जिन लोगों ने किया था, वे भी बड़ी गंभीरता के साथ इस बैठक में शामिल हैं। बैठक में जब भितरघात पर चर्चा हो रही है तो ऐसे लोग बढ़-चढक़र अपने-अपने सुझाव रख रहे हैं ताकि भविष्य में भितरघात न हो। ऐसे लोगों का मानना है कि भितरघात पार्टी की सेहत के लिए अच्छा नहीं होता। भितरघात रोकने के लिए कड़ी गाइडलाइन दी जानी चाहिए, ऐसा सुझाव भी मंथन बैठक में दिया जा रहा है। बैठक में मिष्ठान भी वितरित किया जा रहा है क्योंकि जीत भी हुई है और जीत पर चर्चा मीठे मुंह से की जानी चाहिए। लेकिन कड़वा कुछ नहीं बांटा जा रहा क्योंकि हार भी हुई है। इसलिए मिष्ठान खाते हुए सिर्फ कड़वे घूंट भरे जा रहे हैं। बैठक में पार्टी के तमाम पदाधिकारी और वरिष्ठ कार्यकर्ता उपस्थित हैं। पिछले तीन घंटे से मंथन चल रहा है। इसलिए चल रहा है क्योंकि मंथन की रिपोर्ट हाईकमान को सौंपी जानी है। फिर हाईकमान इस रिपोर्ट पर मंथन करेगा सि जिसके लिए अलग से बैठक होगी और वह हाईकमान के लेवल पर होगी। यह बैठक स्थानीय लेवल पर हो रही है क्योंकि भितरघात भी स्थानीय लेवल पर हुआ है। इसलिए स्थानीय लेवल के नेता और कार्यकर्ता अपने-अपने बूथ की रिपोर्ट और सुझाव लेकर बैठक में आए हुए हैं। बीच में दो-तीन बार लाइट चली जाती है तो पंखे-कूलर बंद हो जाते हैं। मंथन थम जाता है।

मंथन बैठक में शामिल लोग पसीने से तर-बतर हो जाते हैं। बैठक में शामिल एक शख्स कहता है कि हमारी मंथन बैठक को डिस्टर्ब करने के लिए सरकार की ओर से जानबूझकर लाइट गुल करवाई गई है। इसलिए इस बैठक में सरकार के खिलाफ प्रस्ताव पारित किया जाना चाहिए। दूसरा शख्स बैठक में खड़ा होकर कहता है कि इस बैठक से पहले जेनरेटर का इंतजाम होना चाहिए था ताकि लाइट जाए ही नहीं। मंथन बैठक में उपस्थित तीसरा शख्स उठकर कहता है कि हम इस बैठक में बिजली व्यवस्था पर चर्चा करने नहीं आए हैं, बल्कि जीत-हार और भितरघात पर मंथन करने आए हैं, इसलिए विषय से भटका नहीं जाना चाहिए। क्योंकि भटके हुए लोग ही पार्टी को भटका देते हैं और देश में लोकतंत्र भटक जाता है। एक और शख्स बैठक में उठकर कहता है कि हमारी पार्टी में भी कुछ भटके हुए लोग आ गए हैं जो इस बैठक में भी उपस्थित हैं। इन लोगों की वजह से पार्टी में काफी भटकाव की स्थिति उत्पन्न हो गई है। हम अपनी दिशा और दशा भटक रहे हैं। एक और शख्स इसी बीच अपनी जगह से उठकर कहता है कि बाहर मीडिया वाले भी बैठे हैं और बैठक खत्म होने का इंतजार कर रहे हैं ताकि उन्हें खबर का मसाला मिल सके। अगर यह बैठक विषय से ही भटक गई तो हम भटके हुए लोग मीडिया को क्या बताएंगे? मीडिया ने तो पहले ही देश को भटका रखा है। एग्जिट पोल के बहाने दो दिन तक जनता को भटका कर रखा। जब रिजल्ट निकला तो हम आसमान से गिरकर खजूर पर अटक गए। इसलिए अटक गए क्योंकि हम भटक गए। भटके हुए लोग लोकतंत्र को कोई दिशा नहीं दे सकते। इसलिए इस बैठक में अटकने और भटकने पर मंथन होना चाहिए। पार्टी की जीत-हार और भितरघात पर बाद में मंथन किया जा सकता है। हाईकमान को बाद में रिपोर्ट सौंपी जा सकती है। एक सदस्य उठकर कहता है कि हाईकमान ने भी यह मंथन रिपोर्ट अंततः डस्टबिन में डालनी है, इसलिए बैठक में ज्यादा चिंतन करने की जरूरत नहीं है। अभी यह चर्चा चल ही रही होती है कि इसी बीच लाइट आ जाती है। अब लाइट में मंथन शुरू हो जाता है। बात घूम फिर कर फिर भितरघात पर आ जाती है। भविष्य में नुकसान न हो, इस बारे कोई ठोस नीति बनाने की बात बैठक में उठती है। नीति से ही राजनीति चलती है, यह निष्कर्ष निकलता है।

गुरमीत बेदी

लंदन के लिए उड़ी थी एयर इंडिया की पहली इंटरनेशनल फ्लाइट, दो दिन का था सफर; विमान में सवार थीं ये मशहूर हस्तियां

उस वक्त एयर इंडिया को उड़ान शुरू किए करीब दो दशक बीत चुके थे। लेकिन उसके पास सिर्फ घरेलू उड़ानों का तजुर्बा था। इसलिए एयरलाइन ने अंतरराष्ट्रीय उड़ान के लिए दो महीने पहले से तैयारी शुरू कर दी। पायलट स्टाफ से लेकर यात्रियों तक को बाकायदा ट्रेनिंग दी गई। एयरइंडिया ने उड़ान से पहले काहिरा लंदन और जिनेवा में अपना ऑफिस भी खोला।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। 8 जून, 1948 का दिन। देश की पहली एयरलाइन एयर इंडिया (उस वक्त टाटा एयरलाइंस) और देश की एविएशन इंडस्ट्री के लिए बेहद खास दिन। एयर इंडिया ने इस दिन अपनी पहली अंतरराष्ट्रीय उड़ान भरी, लंदन के लिए। विमान में कुल 35 यात्री सवार थे। जाहिर तौर पर इनमें ज्यादातर नवाब और महाराजा थे।

एयरपोर्ट पर पत्रकारों और फोटोग्राफर का जमघट था। जो इस ऐतिहासिक लम्हें को अपने कलम और कैमरे में कैद करने को उत्सुक थे। विमान रात के अंधेरे में उड़ान भरने वाला था। लेकिन, कैमरे के फ्लैश पूरे एयरपोर्ट के किसी कोने में हल्के से भी अंधेरे का भान नहीं होने दे रहे थे।

किसने उड़ाई थी फ्लाइट

तमाम राजा-महाराजा को लंदन लेकर जा रहे विमान का नाम था, मालाबार प्रिंसेस। उड़ान की जिम्मेदारी थी कैप्टन केआर गुजदार पर। उन्हें पहली बार विमान को 5000 मील ले जाना था। रुकने के दो ठिकाने थे, काहिरा (मिस्र) और जिनेवा (स्विटरलैंड)। 35 यात्रियों में 29 लंदन जा रहे थे। वहीं, 6 की मंजिल जिनेवा थी।

कैसे हुई थी यात्रा की तैयारी?

एयर इंडिया को उड़ान शुरू किए करीब दो दशक बीत चुके थे। लेकिन, उसके पास सिर्फ घरेलू उड़ानों का तजुर्बा था। लिहाजा, एयरलाइन ने अंतरराष्ट्रीय उड़ान के लिए दो महीने पहले से तैयारी शुरू कर दी। पायलट, स्टाफ से लेकर यात्रियों तक को बाकायदा ट्रेनिंग दी गई। एयरइंडिया ने उड़ान से पहले काहिरा, लंदन और जिनेवा में अपना ऑफिस भी खोला।

एयर इंडिया ने कैसे भरी उड़ान?

वह जून की गर्मी थी। आसमान पूरी तरह साफ था। चांद उस ऐतिहासिक उड़ान का गवाह नहीं बन पाया, क्योंकि उस दिन वह आसमान से गायब था। अलबत्ता टिमटिमाते तारों ने कैप्टन गुजदार और बाकी क्रू मेंबर की हौसलाअफजाई की। एक ऐतिहासिक उड़ान के सभी स्थितियां आदर्श थीं। कैप्टन गुजदार ने एयरक्राफ्ट का निरीक्षण किया और उन्होंने उड़ान के लिए रजामंदी दी।

रात ठीक 11.15 बजे विमान टेकऑफ के लिए तैयार था। कैप्टन गुजदार ने कंट्रोल रूम से अनुमति ली। फिर उन्होंने सौम्य लफ्जों में एलान किया, 'एयर इंडिया मालाबार प्रिंसेस, अब टेकऑफ के लिए तैयार है।' फिर विमान का इंजन गुर्राया। उसने रनवे पर सरपट दौड़ लगाई और चंद पलों बाद हवा से बात करने लगा।

टिकट और खाने-पीने की व्यवस्था

एयर इंडिया ने टिकट का दाम 1720 रुपये रखा। विमान में खाने-पीने का भी पूरा बंदोबस्त था और उन्हें काफी सावधानी से तय भी किया गया था। एयरहोस्टेस की ड्रेस की बात करें, तो उनका कोट नीला और स्कर्ट आसमानी रंग का था। एयरहोस्टेस की यह ड्रेस 1960 तक रही। फिर इसे परंपरागत साड़ी से रिप्लेस कर दिया गया। एयरहोस्टेस को भी महीनों तक ट्रेनिंग दी गई थी, ताकि वे हरेक यात्री को अहसास करा सकें कि वह एयरलाइन का खास मेहमान है।

जेआरडी टाटा और गणमान्य यात्री

सांताक्रूज एयरपोर्ट के छोटे से टर्मिनल भवन लोगों का जमघट था। यात्रियों और उनके परिवार वालों के अलावा भी बहुत से लोग ऐसे थे, जिनका मकसद सिर्फ इस ऐतिहासिक मौके का गवाह बनना था। यात्रियों में एयर इंडिया के तत्कालीन चेयरमैन जेआरडी टाटा भी थे।

बाकी यात्रियों की बात करें, तो प्रमुख नाम महाराजा दलीप सिंह का था। वह इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया का टेस्ट मैच देखने लंदन जा रहे थे। विमान में कई नवाबों और महाराजाओं के अलावा कुछ बड़े अफसर, अंग्रेज और बिजनेसमैन भी थे। दो साइकिस्ट भी थे, जो बेंबले लंदन में होने वाले ओलंपिक में शिरकत करने जा रहे थे।

भारत के लिए बड़ी उपलब्धि

वह 1948 का साल था और उस वक्त काफी कम देशों की एयरलाइंस अंतरराष्ट्रीय उड़ान भर रही थीं। ऐसे में भारत जैसे देश के लिए यह काफी बड़ी उपलब्धि थी, जो चंद महीने पहले आजाद हुआ था। 8 जून को उड़ान भरने वाला मालाबार प्रिंसेस 10 जून को सुबह तड़के ही लंदन पहुंचा। विमान यात्रा के दौरान 24 घंटे हवा में रहा। लंदन में विमान यात्रियों की आगवानी खुद तत्कालीन भारतीय उच्चायुक्त कृष्णा मेनन ने की। लंदन में भारत की इस पहली अंतरराष्ट्रीय हवाई यात्रा की कामयाबी का जश्न एक बड़ी पार्टी देने के साथ मनाया गया।

पान मसाला और तम्बाकू निर्माता कंपनियों को टैक्स चोरी में होगी मुश्किल, GSTN ने उठाया ये कदम

परिवहन विशेष न्यूज

जीएसटी नेटवर्क ने पान मसाला और तंबाकू उत्पादों के निर्माताओं के लिए एक विशेष फॉर्म जारी किया है जिसमें उन्हें कर चोरी रोकने के लिए कर अधिकारियों के पास खरीदे गए इनपुट और आउटपुट की रिपोर्ट देनी होगी। यह नया फॉर्म जीएसटी एसआरएम-II जीएसटीएन और जीएसटी एसआरएम-I फॉर्म है जो एक महीने के भीतर ही आया है। आइये इसके बारे में जानते हैं।

नई दिल्ली। गुड्स और सर्विस टैक्स नेटवर्क (GSTN) ने पान मसाला और तम्बाकू उद्योग में पारदर्शिता और अनुपालन में सुधार के लिए एक नई प्रणाली लागू की है। इसमें दो फॉर्म जीएसटी SRM-I और जीएसटी SRM-II को शामिल किया गया हैं।

आपको बता दें कि इन फॉर्म के जरिए मसाला और तंबाकू निर्माता कर चोरी रोकने के लिए कर अधिकारियों के पास खरीदे गए इनपुट और आउटपुट की रिपोर्ट देंगे। आइये इनके बारे में जानते हैं।

इनपुट/आउटपुट की रिपोर्टिंग

GST SRM-I मई 2024 में पेश किया गया है और यह फॉर्म निर्माताओं को जीएसटी अधिकारियों के साथ इलेक्ट्रॉनिक रूप से अपनी पैकेजिंग मशीनों को रजिस्टर करने की अनुमति देता है। यह जरूरी उत्पादन को ट्रैक करने और संभावित विसंगतियों की पहचान करने में मदद करती है।

मशीन पंजीकरण के बाद निर्माताओं को अब मासिक आधार पर खरीदे गए कच्चे माल (इनपुट) और तैयार उत्पादों (आउटपुट) का विवरण रिपोर्ट करने के लिए GST SRM-II का उपयोग किया जा सकता है।

यह उत्पादन की मात्रा की स्पष्ट तस्वीर सुनिश्चित करता है और किसी भी कर चोरी के प्रयासों की पहचान करने में मदद करता है।

नियमों का पालन करना है जरूरी

केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड (CBIC) ने पहले 1 अप्रैल, 2024 से प्रभावी पान मसाला और तंबाकू निर्माताओं के लिए सख्त अनुपालन उपायों की घोषणा की थी। इनमें निम्नलिखित उपायों शामिल हैं-

निर्माताओं को अपनी पैकेजिंग मशीनरी को GST अधिकारियों के साथ रजिस्टर करना आवश्यक है। इनपुट और आउटपुट पर विस्तृत रिपोर्ट हर महीने GST SRM-II फॉर्म का उपयोग करके अगले महीने की 10 तारीख तक दाखिल की जानी चाहिए।

वित्त विधेयक 2024 में पंजीकरण आवश्यकता का अनुपालन न करने पर 1 लाख रुपये तक के जुर्माने का प्रस्ताव है। हालांकि, इस जुर्माने के लिए आधिकारिक अधिसूचना अभी जारी नहीं की गई है।

नए सिस्टम के फायदे

मशीनरी को ट्रैक करके और इनपुट/आउटपुट विवरणों की निगरानी करके, सरकार इन उत्पादों की निर्माण प्रक्रिया में बेहतर दृश्यता प्राप्त कर सकती है।

उत्पादन मात्रा पर सटीक डेटा उचित कर संग्रह सुनिश्चित करने और संभावित कर चोरी को रोकने में मदद करता है।

नई प्रणाली सभी निर्माताओं के लिए समान नियम लाता है, यह सुनिश्चित करके कि सभी एक ही रिपोर्टिंग मानकों का पालन करते हैं।

शेयर मार्केट, म्यूचुअल फंड नहीं; कंगना रनौत ने यहां लगाया है सबसे ज्यादा पैसा

परिवहन विशेष न्यूज

37 साल की कंगना ने रियल एस्टेट में काफी निवेश कर रखा है। लेकिन सबसे खास बात है कि उनके पास 50 लाइफ इंश्योरेंस कॉर्पोरेशन (LIC) पॉलिसीज हैं। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या इतनी अधिक बीमा पॉलिसी का होना सही है? आदर्श स्थिति में किसी शख्स के पास कितनी बीमा पॉलिसी होनी चाहिए? साथ ही ज्यादा बीमा पॉलिसी के होने के नुकसान क्या हैं?

नई दिल्ली। हिमाचल प्रदेश के मंडी से कांग्रेस की नवचर्चित सांसद कंगना रनौत (Kangana Ranaut) का चुनावी हलफनामा उनकी वित्तीय स्थिति और निवेश के बारे में कई दिलचस्प जानकारियां देता है। कंगना के पास 91 करोड़ रुपये से ज्यादा की दौलत है। इनमें से 28.7 करोड़ रुपये की चल और 62.9 करोड़ रुपये की अचल संपत्ति है। उन पर 17.38 करोड़ रुपये का कर्ज भी है।

37 साल की कंगना ने रियल एस्टेट में काफी निवेश कर रखा है। लेकिन, सबसे खास बात है कि उनके पास 50 लाइफ इंश्योरेंस कॉर्पोरेशन (LIC) पॉलिसीज हैं। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या इतनी अधिक बीमा पॉलिसी का होना सही है? आदर्श स्थिति में किसी शख्स के पास कितनी बीमा पॉलिसी होनी चाहिए? साथ ही, ज्यादा बीमा पॉलिसी के होने के नुकसान क्या हैं। आइए इन सभी सवालों का जवाब जानते हैं।

कंगना रनौत की संपत्ति कितनी है?

कंगना रनौत की नेटवर्थ 91 करोड़ रुपये से अधिक है। उनके पास 6.70 किलो सोना, 60 किलो चांदी और 3 करोड़ के हीरे हैं। उनका ज्यादा निवेश फिल्म निर्माण में हैं। अगर निवेश के दूसरे विकल्पों की बात करें, तो कंगना ने म्यूचुअल फंड और शेयर बाजार से दूरी बनाकर रखी है। उन्होंने एलआईसी में भारी निवेश कर रखा है।

कंगना के पास भारतीय जीवन बीमा निगम की 50 पॉलिसी हैं। इनमें 48 पॉलिसी 10-10 लाख रुपये बीमाधन वाली है 12 पॉलिसी 5-5 लाख के कवरेज वाली है।

आप कितनी बीमा पॉलिसी ले सकते हैं?

बीमा पॉलिसी लेने की कोई तय सीमा नहीं। यह पूरी तरह से आपकी मर्जी और आर्थिक क्षमता पर निर्भर करता है। आप अपनी जिंदगी के साथ हेल्थ, कार और घर जैसी चीजों का भी इंश्योरेंस करा सकते हैं। बच्चों और बाकी परिवारों का अलग से भी बीमा कर सकते हैं। आपको बस यह ध्यान रखना है कि आपको किस तरह के कवर की जरूरत है। हर शख्स की जरूरतें और प्राथमिकताएं अलग-अलग होती हैं। और वे उसी हिसाब से जीवन बीमा पॉलिसी भी लेते हैं।

ज्यादा इंश्योरेंस पॉलिसी लेने के फायदे

आप अधिक बीमा पॉलिसी के जरिए अपने परिवार के आर्थिक भविष्य को सुरक्षित कर सकते हैं। इससे किसी अनहोनी की स्थिति में आपके परिवार को आर्थिक मोर्चे पर ज्यादा परेशानियां नहीं झेलनी होगी। आप घर, गाड़ी और दुकान जैसी चीजों का बीमा कराके किसी दुर्घटना की स्थिति में नुकसान की भरपाई पा सकते हैं।

नई पॉलिसी लेने का आइडिया जीवन के अहम बदलावों के साथ फिट बैठता है। जैसे कि आपकी शादी हो रही हो, बच्चे का जन्म हुआ, आपने घर खरीदा हो या नया कारोबार शुरू किया हो। इन स्थितियों में इंश्योरेंस और कवर की संख्या बढ़ाने में कोई बुराई नहीं है।

अधिक बीमा पॉलिसी लेने के नुकसान

अगर आपके पास जरूरत से ज्यादा बीमा पॉलिसी है, तो आपके लिए उन्हें मैनेज करना मुश्किल हो सकता है। साथ ही, हो सकता है कि आप एक ही कवर के लिए कई बार प्रीमियम चुका रहे हों। जैसे कि आपने एक्सिडेंट इंश्योरेंस करा रखा है और आपने कोई दूसरी पॉलिसी ली है। उसमें भी एक्सिडेंट का बीमा है, तो आपको एक ही सुविधा के लिए दो बार प्रीमियम चुकाना पड़ेगा।

बीमा का इस्तेमाल करने की बारी आने पर भी मुश्किल हो सकती है। आपके पास अलग-अलग कंपनियों की अलग-अलग पॉलिसी हो सकती हैं। उन सबमें क्लेम भी अपनेआप में एक सिरदर्दी हो जाएगी। हर पॉलिसी के लिए प्रीमियम, कवरेज डिटेल, रिन्यूअल की तारीख और लाभार्थियों को ट्रैक करने में काफी वक्त और संसाधन खर्च होगा।

कितना बीमा पॉलिसी लेनी चाहिए?

आप कुछ ही बीमा पॉलिसी के जरिए अपने पूरे परिवार को एक सुरक्षा चक्र में ला सकते हैं। मान लीजिए कि आप शादीशुदा हैं। आपके दो बच्चे हैं। परिवार पूरी तरह से आपकी आय पर निर्भर है। ऐसे में आपको सुनिश्चित करना चाहिए कि आपके साथ किसी अनहोनी की सूरत में आपके परिवार का खर्च चल जाएगा।

इस स्थिति में आप अपने बच्चों के पढ़ाई और शादी के खर्च को कवर करने वाली पॉलिसी ले सकते हैं। साथ ही, घर, गाड़ी, दुकान और अपने स्वास्थ्य से जुड़ी पॉलिसी खरीदना भी अच्छी बात है। आप ऐसी जीवन बीमा पॉलिसी भी ले सकते हैं, जो अनहोनी की सूरत में अतिरिक्त लाभ देती हो, साथ जीवित रहने के दौरान भी वह आपके काम आ सके।

ये पांच स्कीमें बचाएंगी आपका लाखों का टैक्स; तगड़ा रिटर्न भी मिलेगा; पैसे रहेंगे सेफ

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। इनकम टैक्स रिटर्न (ITR) फाइल करने की आखिरी तारीख 31 जुलाई 2024 काफी नजदीक आ गई है। ऐसे में अगर आप भी निवेश करके टैक्स बचाना चाहते हैं, तो अभी भी आपके पास मौका है। हम आपको पांच स्कीमों के बारे में बता रहे हैं, जिनमें पैसे लगाकर आप इनकम टैक्स के सेक्शन 80सी के तहत डेढ़ लाख रुपये तक का टैक्स बचा सकते हैं।

पांच साल की बैंक FD

फिक्स्ड डिपॉजिट (FD) को निवेश का सबसे सुरक्षित तरीका माना जाता है। इसमें आपकी निवेश वाली रकम सेफ तो रहती ही है, साथ ही आप उस पर तय रिटर्न भी मिल सकता है। पांच साल की एफडी को इनकम टैक्स (Income Tax) सेविंग फिक्स्ड डिपॉजिट भी कहा जाता है। इसमें आप निवेश को पांच साल से पहले नहीं भुना सकते। अगर निवेश को भुनाना जरूरी है, तो आप टैक्स छूट के लाभ को एडजस्ट करना पड़ सकता है।

पब्लिक प्रोविडेंट फंड (PPF)

PPF भी इनकम टैक्स बचाने का एक अच्छा तरीका है। आप अपने जीवनसाथी या फिर बच्चों के PPF अकाउंट में निवेश करके भी टैक्स छूट का लाभ उठा सकते हैं। हालांकि, माता-पिता या भाई-बहन के अकाउंट में निवेश पर इनकम टैक्स में कोई छूट नहीं मिलती। PPF अकाउंट के मैच्योर होने की अवधि 15 साल है। सबसे अच्छी बात कि इसमें निवेश, ब्याज और मैच्योरिटी पर रकम की निकासी पर भी टैक्स छूट मिलती है।

इक्विटी लिंक्ड सेविंग्स स्कीम (ELSS)

ELSS में भी आप 80C के तहत डेढ़ लाख रुपये तक डिडक्शन क्लेम कर सकते हैं। लेकिन, ELSS में दिक्कत यह है कि इसमें तीन साल का लॉक-इन पीरियड होता है। इसका मतलब कि आप निवेश वाली रकम तीन साल से पहले नहीं निकाल सकते। हालांकि, यूनिट बेचने पर होने वाले फायदे पर इनकम टैक्स (Income Tax) नहीं देना पड़ता। डिविडेंड भी टैक्स-फ्री रहता है। इसमें आप एकमुश्त या फिर SIP के जरिए निवेश कर सकते हैं।

यूनिट लिंक्ड इंश्योरेंस प्लान (ULIP)

यूलिप में प्रीमियम की पूरी रकम पर आपको इनकम टैक्स के सेक्शन 80C के तहत टैक्स छूट मिलती है। यह लाइफ इंश्योरेंस पॉलिसी और इन्वेस्टमेंट का मिला-जुला रूप है। इसमें आपके प्रीमियम का एक हिस्सा लाइफ इंश्योरेंस कवर के लिए जाता है, जबकि बाकी हिस्सा रिटर्न के लिए किसी फंड में इन्वेस्टमेंट कर दिया जाता है। यूलिप में प्रीमियम की पूरी रकम पर 80C के तहत टैक्स छूट मिलती है।

नेशनल सेविंग सर्टिफिकेट (NSC)

NSC भी टैक्स बचाने वाली स्कीम के लिहाज से काफी लोकप्रिय है। इसके मैच्योर होने की अवधि पांच साल में है। इसमें भी 80C के तहत डेढ़ लाख रुपये की टैक्स छूट का फायदा मिलता है। इसमें ब्याज पर टैक्स देना पड़ता है। लेकिन, शुरुआती वर्षों के ब्याज को NSC में निवेश समझा जाता है। ऐसे में उस पर आप 80C के तहत टैक्स छूट क्लेम कर सकते हैं।

एग्जिट पोल के झटके से उबरा स्टॉक मार्केट: पिछले हफ्ते 3 फीसदी चढ़े सेसेंक्स और निफ्टी, अब आगे क्या?

एग्जिट पोल के बाद सोमवार को निवेशकों ने स्थिर सरकार आने के अनुमान की वजह से भारी खरीदारी की। लेकिन मंगलवार यानी 4 जून को नतीजे एग्जिट पोल के अनुमान से मेल नहीं खा रहे थे। इससे शेयर मार्केट का सेंटिमेंट खराब हुआ और निवेशकों ने बिकवाली खासकर पैनिक सेलिंग की। लेकिन आखिरी तीन कारोबारी सत्रों में बाजार ने अच्छी रिकवरी की।

नई दिल्ली। पिछले हफ्ते देश की सियासत में जबरदस्त उतार-चढ़ाव दिखा। पल-पल बदलते राजनीतिक हालात का पूरा असर शेयर मार्केट पर भी दिखा। 1 जून को लोकसभा चुनाव के एग्जिट पोल के नतीजे आए। सभी एग्जिट पोल ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुआई में बीजेपी अकेले भारी बहुमत के साथ सत्ता में आ रही है।

एग्जिट पोल ने किया भावनाओं से खेल

एग्जिट पोल शनिवार को आया और उस दिन शेयर मार्केट बंद था। बाजार खुला सोमवार को निवेशकों ने स्थिर सरकार आने के अनुमान की वजह से भारी खरीदारी की। स्टॉक मार्केट करीब तीन फीसदी तक उछल गया। लेकिन, मंगलवार यानी 4 जून को लोकसभा चुनाव के असल नतीजे एग्जिट पोल के अनुमान से मेल नहीं खा रहे थे। खुद पीएम मोदी कुछ वक्त तक वाराणसी की सीट से पीछे चले। इससे शेयर मार्केट का सेंटिमेंट खराब हुआ और निवेशक बिकवाली, खासकर पैनिक सेलिंग करने लगे। बीएसई का सेसेंक्स एक वक्त करीब 7 फीसदी तक टूट गया। निफ्टी में भी भारी गिरावट दिखी। एक दिन पहले जिन सरकारी कंपनियों के शेयरों में तूफानी तेजी आई थी, वे एक झटके में धड़ाम हो गए। निवेशकों के लाखों करोड़ रुपये एक झटके में खाक हो गए।

हालांकि, शाम तक तस्वीर साफ हो गई कि बीजेपी को भले अकेले पूर्ण बहुमत नहीं मिला, लेकिन सहयोगियों के दम पर सरकार एनडीए की बन जाएगी और पीएम नरेंद्र मोदी लगातार तीसरी बार सत्ता में आएंगे। इससे निवेशकों का हौसला बढ़ा और उन्होंने वापस बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार को जमकर खरीदारी की। इससे शेयर मार्केट अच्छा रिकवर किया।

सेसेंक्स और निफ्टी ने बनाया नया हाई

शुक्रवार को आरबीआई ने अपनी मौद्रिक नीति का एलान किया और ब्याज दरों में कोई बदलाव नहीं किया। साथ ही, केंद्रीय बैंक ने जीडीपी ग्रोथ के अनुमान को बढ़ाया। इससे भी बाजार को बड़ा बूस्ट मिला। बीएसई सेसेंक्स (Sensex) ने शुक्रवार को 76,795.31 और निफ्टी (Nifty) ने 23,338.70 का नया हाई बनाया। सेसेंक्स 3.69 फीसदी यानी 2,732 अंक उछलकर 76,693.36 पर बंद हुआ। वहीं, निफ्टी 3.37 फीसदी यानी 759 प्वाइंट चढ़कर 23,290 के स्तर पर पहुंच गया।

वृंदावनः धाम है, पर्यटन नगरी नहीं - एक अपील : अंकुर

वृंदावन, श्रीकृष्ण की पावन भूमि, एक धाम है, पर्यटन नगरी नहीं। यहाँ की कुंज गलियों में आपके बड़े वाहनों का समेट पाना मुश्किल हो जाता है। जब आप परिक्रमा मार्ग में प्रवेश करने की कोशिश करते हैं, तो पार्किंग की व्यवस्था भी कम पड़ जाती है। अतः, जो लोग वृंदावन आते हैं, उनसे विनम्र अपील है कि वे यहाँ के नियमों और अनुशासन का पालन करें।

संयम और धैर्य का परिचय दें

वृंदावन की गलियाँ संकरी हैं और यहाँ श्रद्धालुओं की भारी भीड़ होती है। ऐसे में, बड़े वाहनों का प्रवेश कठिनाई पैदा करता है। इसलिए, आपसे अनुरोध है कि अपने वाहन को धीरे चलाएं और हॉर्न का कम से कम प्रयोग करें। अक्सर देखा गया है कि परिक्रमा मार्ग पर चलते समय श्रद्धालु वाहनों की चपेट में आ जाते हैं या उनकी आस्था को ठेस पहुंचती है।

पैदल यात्रा को प्राथमिकता दें

यदि आपको वृंदावन की यात्रा करनी है, तो पैदल चलने की आदत डालें। इससे न केवल आपका तनाव कम होगा, बल्कि यातायात का भार भी कम होगा। वृंदावन की संकरी गलियों में पैदल चलना ही सबसे अच्छा विकल्प है। इससे न केवल आपकी सेहत में सुधार होगा, बल्कि आप यहाँ की संस्कृति और वातावरण का भी पूर्ण आनंद ले सकेंगे।

यातायात व्यवस्था में सुधार

अक्सर देखा जाता है कि लोगों से ज्यादा तो ई-रिक्शा और गाड़ियाँ सड़क को जाम कर देती हैं, जिसके परिणामस्वरूप प्रशासन की पूरी जिम्मेदारी सड़क को खाली कराने में ही लग जाती है। इससे बचने के लिए, यह आवश्यक है कि आप यातायात नियमों का पालन करें और प्रशासन द्वारा दिए गए निर्देशों का सम्मान करें।

वृंदावन एक पावन धाम है, यहाँ की गलियाँ संकरी और पारंपरिक हैं। इसे पर्यटक स्थल के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि एक धार्मिक धाम के रूप में सम्मान देना चाहिए। यदि आप वृंदावन आते हैं, तो कृपया संयम का परिचय दें, पैदल यात्रा को प्राथमिकता दें, और यातायात के नियमों का पालन करें। इससे न केवल आपकी यात्रा सुखद होगी, बल्कि वृंदावन की पवित्रता और सौंदर्य भी बना रहेगा।

आइए, हम सब मिलकर वृंदावन की पवित्रता और सुंदरता को बनाए रखें और इसे आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित करें। वृंदावन धाम की सुरक्षा और स्वच्छता हम सभी की जिम्मेदारी है।

indiangreenbuddy@gmail.com

दिहाड़ी बढ़ाने की राह में केंद्र सरकार, कितना होगा न्यूनतम मजदूरी? सभी राज्यों के लिए होगा मान्य

असंगठित सेक्टर में काम कर रहे श्रमिकों के लिए केंद्र सरकार न्यूनतम मजदूरी का एक फ्लोर लेवल तय करने जा रही है। केंद्र सरकार के इस कदम से लगभग 50 करोड़ असंगठित सेक्टर के श्रमिकों को लाभ मिल सकता है। श्रम मंत्रालय इस बार न्यूनतम मजदूरी की जगह न्यूनतम जीवनयापन लागत तय करने की तैयारी में है। इस काम में अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन की भी मदद ली जा रही है।

नई दिल्ली। असंगठित सेक्टर में काम कर रहे श्रमिकों के लिए केंद्र सरकार न्यूनतम मजदूरी का एक फ्लोर लेवल तय करने जा रही है। श्रम मंत्रालय इसकी तैयारी में जुट गया है। सभी राज्यों के लिए इस फ्लोर लेवल के हिसाब से न्यूनतम मजदूरी देना अनिवार्य होगा। अभी राज्य केंद्र सरकार की न्यूनतम मजदूरी के फ्लोर लेवल को मानने के लिए बाध्य नहीं है क्योंकि श्रम संबंधी विषय संविधान की समवर्ती सूची में शामिल हैं। इसलिए केंद्र व राज्य दोनों ही अपनी-अपनी सुविधा के हिसाब से न्यूनतम मजदूरी तय करते हैं।

400 रुपये का वादा पूरा करेगी कांग्रेस?

केंद्र सरकार के इस कदम से लगभग 50 करोड़ असंगठित सेक्टर के श्रमिकों को लाभ मिल सकता है। क्योंकि भाजपा व गैर भाजपा शासित दोनों ही राज्य केंद्र के इस कदम का विरोध नहीं करेंगे। कांग्रेस ने तो अभी लोकसभा चुनाव के लिए जारी अपने घोषणा पत्र में न्यूनतम मजदूरी प्रतिदिन 400 रुपए करने का वादा किया था। श्रम मंत्रालय के उच्च पदस्थ सूत्रों के मुताबिक केंद्र इस मामले में कानून लाने जा रहा है ताकि कोई भी राज्य केंद्र की तरफ से तय न्यूनतम मजदूरी से कम मजदूरी किसी श्रमिक को नहीं दे सके। राज्य केंद्र की तरफ से तय न्यूनतम मजदूरी से अधिक मजदूरी देने के लिए स्वतंत्र होगा, लेकिन उससे कम नहीं दे सकेगा।

पहले 176 रुपये.. अब कितनी होगी दिहाड़ी?

इससे पहले वर्ष 2017 में केंद्र सरकार ने न्यूनतम मजदूरी के फ्लोर लेवल को अपडेट किया था जो मात्र 176 रुपए प्रतिदिन है। श्रम मंत्रालय इस बार न्यूनतम मजदूरी की जगह न्यूनतम जीवनयापन लागत तय करने की तैयारी में है। इस काम में अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन की भी मदद ली जा रही है। न्यूनतम मजदूरी श्रमिकों को काम के नाम पर शोषण से बचाने के लिए तय की जाती है जबकि जीवनयापन लागत में रोटी-कपड़ा, मकान जैसी बुनियादी जरूरतों के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी जरूरतों को भी शामिल किया जाता है। राज्य कुशल व गैर कुशल दोनों प्रकार के श्रमिकों के लिए न्यूनतम मजदूरी को अपडेट करते रहते हैं। राज्यों में गैर कुशल श्रमिकों के लिए अभी न्यूनतम मजदूरी औसतन 7000-12,000 रुपए प्रतिमाह के बीच है। दिल्ली में गैर कुशल श्रमिकों के लिए न्यूनतम वेतन 17,200 रुपए प्रतिमाह है।

रामोजी राव के निधन पर कई सितारों ने जताया शोक, चिरंजीवी और एसएस राजामौली ने भी दी श्रद्धांजलि

मीडिया जगत की जानी मानी हस्ती रामोजी राव के निधन पर फिल्म अभिनेता और पद्म विभूषण से सम्मानित चिरंजीवी ने शनिवार को शोक व्यक्त किया। मीडिया जगत की जानी मानी हस्ती एवं खबरों और मनोरंजन की दुनिया में व्यापक बदलाव लाने वाले रामोजी समूह के अध्यक्ष रामोजी राव का शनिवार सुबह यहां एक अस्पताल में निधन हो गया। वह 88 वर्ष के थे।

परिवहन विशेष न्यूज

हैदराबाद। मीडिया जगत की जानी मानी हस्ती रामोजी राव के निधन पर फिल्म अभिनेता और पद्म विभूषण से सम्मानित चिरंजीवी ने शनिवार को शोक व्यक्त किया। मीडिया जगत की जानी मानी हस्ती एवं खबरों और मनोरंजन की दुनिया में व्यापक बदलाव लाने वाले रामोजी समूह के अध्यक्ष रामोजी राव का शनिवार सुबह यहां एक अस्पताल में निधन हो गया। वह 88 वर्ष के थे।

रामोजी राव के निधन पर चिरंजीवी ने उन्हें श्रद्धांजलि दी। रामोजी राव का आज सुबह हैदराबाद के स्टार अस्पताल में इलाज के दौरान निधन हो गया। इस मौके पर चिरंजीवी ने कहा, ₹मुझे पूरा विश्वास है कि उनके उत्तराधिकारी उनके सपने को आगे ले जाएंगे और उसे पूरा करेंगे। सभी ने उनमें एक महान व्यक्ति देखा होगा, लेकिन मैंने उनमें एक छोटा बच्चा देखा है।"

उन्होंने कहा, 2009 में मैं उनसे अक्सर मिलता था और प्रजा राज्यम पार्टी के लिए उनकी सलाह लेता था... वे अपने विचारों को अलग-अलग रंगों की स्याही से डायरी में लिखते थे। वे हमेशा सोचते थे कि समाज के लिए आगे क्या करना है... यह न केवल उनके परिवार के लिए एक बड़ी क्षति है, बल्कि तेलुगु लोगों ने एक महान व्यक्ति और महान शक्ति खो दी है। वे जहां भी होंगे, हमारे साथ रहेंगे। मैं प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति मिले। मैं अपनी संवेदना व्यक्त करता हूं।₹

रामोजी राव के निधन पर रजनीकांत, चिरंजीवी, अल्लू अर्जुन, राम चरण और जूनियर एनटीआर समेत सिनेमा जगत की कई हस्तियों ने शनिवार को शोक व्यक्त किया। रामोजी राव ने समाचार पत्र 'ईनाडु' और ईटीवी चैनल समूह की शुरुआत करके अविभाजित आंध्र प्रदेश में मीडिया जगत में क्रांतिकारी बदलाव किया था। उन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था।

रजनीकांत ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में राव को अपना मार्गदर्शक और शुभचिंतक बताते हुए कहा कि वह उनके निधन से ''बहुत दुखी'' हैं। उन्होंने कहा, ''पत्रकारिता और सिनेमा में इतिहास रचने वाले और राजनीति में महान 'किंगमेकर'। वे मेरे जीवन में मेरे मार्गदर्शक और प्रेरणास्रोत थे। भगवान उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे।''

चिरंजीवी ने 'एक्स' पर एक भावुक संदेश पोस्ट करते हुए कहा कि रामोजी राव एक पहाड़ की तरह थे जो कभी किसी के सामने नहीं झुके। अल्लू अर्जुन ने कहा कि रामोजी राव एक ''अग्रणी और प्रेरणादायक दूरदर्शी'' थे और मीडिया दिग्गज के प्रति उनके मन में गहरा सम्मान है।

रामोजी फिल्म सिटी (आरएफसी) को 'गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स' द्वारा दुनिया की सबसे बड़ी फिल्म सिटी के रूप में मान्यता दी गई है। हैदराबाद के बाहरी इलाके में स्थित रामोजी फिल्म सिटी में हजारों फिल्मों की शूटिंग हुई है, जिनमें एसएस राजामौली की दो भाग वाली ब्लॉकबस्टर 'बाहुबली' भी शामिल है।

'बाहुबली' और 'आरआरआर' के निर्देशक फिल्म निर्माता एसएस राजामौली ने कहा कि राव को देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया जाना चाहिए।

भारतीय सेना के कंधे मजबूत करने के लिए मिले नए 473 युवा सैन्य अधिकारी, परेड में उत्तराखंड के रुतबा कायम

देश के नए सैन्य अधिकारी सीमा की रक्षा को तैयार हैं। उत्तराखंड के देहरादून स्थित भारतीय सैन्य अकादमी में शनिवार को आयोजित पासिंग आउट परेड के बाद भारतीय सेना को 355 युवा अधिकारी मिले। इसके अलावा मित्र देशों के 39 कैडेट भी अकादमी से कड़ा प्रशिक्षण लेकर अपनी-अपनी सेना का हिस्सा बने हैं। लेफ्टिनेंट जनरल एमवी सुचेंद्र कुमार ने बतौर निरीक्षण अधिकारी परेड की सलामी ली।

नई दिल्ली। देश के नए सैन्य अधिकारी सीमा की रक्षा को तैयार हैं। उत्तराखंड के देहरादून स्थित भारतीय सैन्य अकादमी में शनिवार को आयोजित पासिंग आउट परेड के बाद भारतीय सेना को 355 युवा अधिकारी मिले। इसके अलावा मित्र देशों के 39 कैडेट भी अकादमी से कड़ा प्रशिक्षण लेकर अपनी-अपनी सेना का हिस्सा बने हैं। सेना की उत्तरी कमान के जनरल ऑफिसर कमांडिंग इन चीफ लेफ्टिनेंट जनरल एमवी सुचेंद्र कुमार ने बतौर निरीक्षण अधिकारी परेड की सलामी ली। इस बार भी परेड में उत्तराखंड का रुतबा कायम रहा। पासिंग आउट कोर्स के लिए मिलने वाले पुरस्कारों में तीन उत्तराखंड के कैडेट के नाम रहे। वहीं, बिहार ओटीए में भी पासिंग आउट परेड के बाद भारतीय सेना व असम रायफल्स को मिले 118 अधिकारी मिले।

चेटवुड भवन के सामने ड्रिल स्क्वॉयर पर हुई पासिंग आउट परेड

पासिंग आउट परेड भारतीय सैन्य अकादमी के ऐतिहासिक चेटवुड भवन के सामने ड्रिल स्क्वॉयर पर हुई। सुबह 6 बजकर 47 मिनट पर एडवांस कॉल के साथ ही छाती ताने देश के भावी कर्णधार असीम हिम्मत और हौसले के साथ कदम बढ़ाते हुए परेड के लिए पहुंचे। कैडेट ने शानदार मार्चपास्ट से दर्शक दीर्घा में बैठे हर शख्स को मंत्रमुग्ध कर दिया। निरीक्षण अधिकारी ने इस दौरान उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कैडेट को सम्मानित किया।

आसमान से हेलीकॉप्टरों के जरिये पुष्प वर्षा हुई

युवा सैन्य अधिकारी जब अंतिम पग भर रहे थे तो आसमान से हेलीकॉप्टरों के जरिये उन पर पुष्प वर्षा हो रही थी। पास आउट बैच में शामिल देश-विदेश के 394 कैडेट परेड के बाद पीपिंग व ओथ सेरेमनी का हिस्सा बने, फिर अकादमी के निजाम पवेलियन में कसम परेड के बाद पहला कदम पार कर सैन्य अधिकारी बन गए। इनमें 355 युवा अधिकारी भारतीय थलसेना को मिले।

तकनीकी प्रगति के दौर में बदला लड़ाई का परिदृश्य

नव सैन्य अधिकारियों को संबोधित करते हुए लेफ्टिनेंट जनरल एमवी सुचेंद्र कुमार ने कहा कि प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष, साइबर, सूचना क्षेत्र और पारंपरिक उपकरणों की क्षमता में प्रगति से युद्ध का परिदृश्य निरंतर बदल रहा है। यह अधिक जटिल, संघर्षपूर्ण और घातक है। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहें। यह कहावत भी याद रखें कि मशीन के पीछे का व्यक्ति ही सबसे अधिक मायने रखता है। शारीरिक फिटनेस, मानसिक चपलता, तार्किक सोच, तकनीकी कौशल और खुद को परिस्थिति के अनुसार ढालने की क्षमता ही आपकी सफलता तय करेगी।

देश के लिए महत्वपूर्ण और गर्व का अवसर उन्होंने कहा कि यह वास्तव में देश के लिए महत्वपूर्ण और गर्व का अवसर है कि 355 कैडेट अधिकारी के रूप में हमारी गौरवशाली सेना का हिस्सा बन रहे हैं। मैं सेना की तरफ से उनका स्वागत करता हूं। मित्र देशों के 39 कैडेट को शुभकामनाएं देते हुए विश्वास जताया कि वह अपने देश को गौरवान्वित करेंगे।

इन्हें मिला पुरस्कार

स्वार्ड ऑफ ऑनर व स्वर्ण पदक- प्रवीण सिंह, आगरा (उत्तर प्रदेश), रजत पदक मोहित कापड़ी, पिथौरागढ़ (उत्तराखंड), रजत पदक टीजी- विनय भंडारी, पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखंड), कांस्य पदक- शौर्य भट्ट, पिथौरागढ़ (उत्तराखंड), चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ बैनर- कोहिमा कंपनी - सर्वश्रेष्ठ विदेशी कैडेट- मोहम्मद नूर कुतुब-उल-आलम (बांग्लादेश)

भारतीय सेना व असम रायफल्स को मिले 118 अधिकारी

बिहार के ओटीए गया में शनिवार को रजत जयंती पासिंग आउट परेड के साथ ही भारतीय सेना को 103 और असम राइफल्स को 15 अधिकारी प्राप्त हुए। परेड का निरीक्षण उपसेना प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल उपेन्द्र द्विवेदी व कमांडेंट ले. ज. परमजीत सिंह मिन्हास ने किया। इस दौरान अन्य अधिकारी व कैडेटों के स्वजन भी मौजूद थे। उपसेना प्रमुख ले. ज. उपेन्द्र द्विवेदी ने युवा सैन्य अधिकारियों से सेना के मूल्यों, परंपराओं और लोकाचार को बनाए रखने का आह्वान किया।

अभी भी हिंसा में झुलस रहा मणिपुर! उग्रवादियों ने दो पुलिस चौकियों समेत 70 घर फूंके

मणिपुर के जिरीबाम जिले में उग्रवादियों ने शनिवार को एक समुदाय के 70 से अधिक घर जला दिए। उग्रवादियों ने दो पुलिस चौकियों वन विभाग के कार्यालय में भी आग लगा दी। हिंसा के बाद जिरीबाम के पुलिस अधीक्षक का तबादला कर दिया गया है। उग्रवादियों के खिलाफ अभियान में सुरक्षाकर्मियों की सहायता के लिए 70 से अधिक राज्य पुलिस कमांडो की टुकड़ी को इंफाल से जिरीबाम भेजा गया है।

इंफाल। मणिपुर के जिरीबाम जिले में उग्रवादियों ने शनिवार को एक समुदाय के 70 से अधिक घर जला दिए। उग्रवादियों ने दो पुलिस चौकियों, वन विभाग के कार्यालय में भी आग लगा दी। हिंसा के बाद जिरीबाम के पुलिस अधीक्षक (एसपी) का तबादला कर दिया गया है। अधिकारियों ने बताया कि उग्रवादियों के खिलाफ अभियान में सुरक्षाकर्मियों की सहायता के लिए 70 से अधिक राज्य पुलिस कमांडो की टुकड़ी को इंफाल से जिरीबाम भेजा गया है। अतिरिक्त सुरक्षा बलों को क्षेत्र में तैनात किया गया है। अधिकारियों ने कहा कि लगभग मैतेयी समुदाय के 239 लोगों को शुक्रवार को जिले के खेल परिसर में बनाए गए राहत शिविर में ले जाया गया है। इनमें ज्यादातर महिलाएं और बच्चे हैं।

वन विभाग के गोआखाल कार्यालय में भी आगजनी

वरिष्ठ अधिकारी के मुताबिक उग्रवादियों ने लमताई खुनौ, डिबोंग खुनौ, नुनखाल और बेगरा गांवों में 70 से अधिक घरों को आग लगा दी। शनिवार सुबह उग्रवादियों ने जिरीमुख और चोटो बेकरा की पुलिस चौकियों और वन विभाग के गोआखाल कार्यालय में भी आगजनी। आगजनी के कुछ घंटों बाद राज्य सरकार ने जिरीबाम के एसपी ए. घनश्याम शर्मा को मणिपुर पुलिस प्रशिक्षण कॉलेज के अतिरिक्त निदेशक के पद पर तबादला कर दिया।

उग्रवादियों द्वारा एक व्यक्ति की हत्या के बाद भड़की हिंसा

एम. प्रदीप सिंह जो पुलिस प्रशिक्षण कॉलेज के अतिरिक्त निदेशक के रूप में कार्यरत थे, जिरीबाम जिले के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के रूप में कार्यभार संभालेंगे। उग्रवादियों द्वारा एक व्यक्ति की हत्या के बाद हिंसा भड़की है। गुरुवार रात जिरीबाम में सोइबाम सरतकुमार सिंह का शव मिला था। शव पर जख्म के कई निशान थे। इसके बाद स्थानीय लोगों ने विरोध-प्रदर्शन किया। जिरीबाम और आसपास के तामेंगलोंग जिलों में अनिश्चित काल के लिए कर्फ्यू लगा दिया गया है।

सांसद ने लोगों के जीवन की रक्षा करने का आग्रह किया

इस बीच भीतरी मणिपुर लोकसभा सीट से नवनिर्वाचित सांसद अंगोमचा बिमोल अकोईजाम ने कहा, राज्य सरकार से जिरीबाम जिले के लोगों के जीवन की रक्षा करने का आग्रह किया है। पिछले वर्ष मई से मणिपुर हिंसा से झुलस रहा है, लेकिन जिरीबाम अब तक जातीय संघर्ष से अप्रभावित रहा था। मणिपुर में मैतेयी और कुकी लोगों के बीच जातीय संघर्ष के कारण 200 से अधिक लोगों की मौत हो गई है और हजारों लोग बेघर हो गए हैं।

बांदा सीसी रोड का निर्माण ना हो पाने से परेशान ग्रामीण

परिवहन विशेष न्यूज

बांदा। जिले के अंतर्गत ग्राम पंचायत डढवामानपुर के कारीडाडी कुम्हारन पुरवा का है जहां आज भी निकलने के लिए किसी प्रकार की रास्ता नहीं बनी है हाल ही में 18 तारीख को मौके पर पहुंचकर नायब तहसीलदार अतर्रा एवम साथ ही अधिकारीगण तथा साथ मे ग्राम प्रधान द्वारा आश्वासन दिया गया था कि बीस तारीख की मतदान होने के बाद आपके रोड निर्माण का कार्य शुरू हो जाएगा। लेकिन अभी तक किसी भी प्रकार का कार्य शुरू नहीं हुआ है वहा के ग्रामीणों का कहना है कि बरसात होने से पहले रोड़ बन जाएगी तो ठीक रहेगा क्योंकि बरसात होने के बाद यहां किसी प्रकार का वाहन नही आयेगा और रोड़ निर्माण नही हो जाएगा उनका कहना है कि हम लोग 50 साल से इस समस्या को झेल रहे हैं आज तक किसी ने रोड़ नही बनवाई है, रोड़ न होने से यहां के बच्चों को स्कूल जाने मे भी समस्या होती है साथ ही कोई बीमार हो जाता है या किसी औरत की डिलिवरी होने वाली होती है तो चारपाई में लेकर 1.5 किलोमीटर जाना पड़ता है, इस समस्या से कई बार समय से न पहुंचने पर जान भी गई है ग्रामीणों में आक्रोश है कि चुनाव के समय वोट मांगने तो कई लोग आते हैं लेकिन विकास एवम रोड बनवाने के लिए कोई नहीं आता है। वोट लेने के लिए सिर्फ झूठी तसल्ली दी जाती है लेकिन वोट मिलने के बाद यहां कोई झांकने नही आता है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023